ज्ञानामृत

जनवरी, 1988
वर्ष 23 ❋ अंक 7

मूल्य 1.75

करनाल में आयोजित शिक्षाविद् सम्मेलन के अवसर पर मुख्य अतिथि भ्राता बनारसीदास गुप्ता, उप-मुख्यमंत्री हरियाणा तथा विशेष अतिथि भ्राता स्टीव नारायण, भारत में ग्याना के उच्चायुक्त सहयोग का हाथ मिलाते हुए। दादी चन्द्रमणि जी उन्हें योग दृष्टि देते हुए।

राष्ट्रपति भ्राता वेंकटरमण जी के शुभ जन्म दिन पर ब्र.कु. सन्तोष जी दीर्घायु के लिए आत्म-स्मृति का तिलक लगा रही हैं।

राजौरी गार्डन (दिल्ली): सुभाष नगर में आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन अवसर पर ब्र.कु. आशा मेले का उद्देश्य बता रही हैं।

माउंट आबू: हरियाणा विधान सभा के उपाध्यक्ष तथा कुछ विधानसभा सदस्य पाण्डव भवन में पधारे। ब्र.कु. जगदीश चन्द्रजी उन्हें "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार"-कार्यक्रम के विषय में बताते हुए।

गीदड़बाहा मंडी में डिप्टी कमिश्नर फरीदकोट भूपिन्द सिंह आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं. साथ में ब्र.कु. बहन-भाई खड़े हैं।

पठानकोट सेवाकेन्द्र की ओर से एक कार्यक्रम में केन्द्रीय संसद सदस्य भ्राता अटल बिहारी बाजपेयी जी को ईश्वरीय सौगात व सन्देश दिया गया। ब्र.कु. भाई बहिनें स्टेज पर उपस्थित हैं।

कटक (कालेज स्क्वायर) सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित सम्मेलन में प्रवचन करते हुए भ्रा राजेन्द्र प्रसाद (डायरेक्टर आल इन्डिया रेडियो स्टेशन, कटक) मंच पर अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं।

कलकत्ता के प्रसिद्ध दुर्गा मन्दिर में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उद्घाटन करते हुए मन्दिर के प्रधान भ्राता श्यामलदत्त जी, दादी सन्तरी जी व अन्य बहन-भाई दिखाई दे रहे हैं।

पटेल नगर में हुई प्रदर्शनी का उद्घाटन स्थानीय निगम पार्षद भ्राता ओम प्रकाश गुलाटी जी ने किया। वे प्रदर्शनी बड़े ध्यानपूर्वक समझ रहे हैं।

मद्रास:दादी जानकी जी तथा ब्र.कु. निर्मला चालीसवें वार्षिक विश्व यूनिवर्सिटी सम्मेलन को सम्बोधन करते हुए।

माउंट आबू में बी.के. रोज़ी बहन हरियाणा राज्य के डिप्टी स्पीकर भ्राता कुलबीर सिंह मलिक को ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

राजपीपला नगर में आयोजित "स्वर्णिमयुग आध्यात्मिक मेले" के उद्‌घाटन समारोह में प्रवचन करती हुई दादी प्रकाशमणि जी तथा साथ में अतिथिगण बैठे हैं।

दिल्ली (हरीनगर) सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजित प्रदर्शनी को देखने के पश्चात् सिन्डीकेट बैंक के मैनेजर भ्राता ए.डी. पाई अपने विचार लिखते हुए।

मद्रास में जानकी दादी जी के आगमन पर तमिल नाडू राज्य के कानून व शिक्षा मंत्री भ्राता पोनियान जी पधारे थे। यह चित्र उसी अवसर का है।

इन्दौर में आयोजित "विश्व समस्या परिचर्चा कार्यक्रम" की अध्यक्षा बी.के. वेदान्ती बहन अपने विचार प्रकट कर रही हैं। मंच पर अन्य अतिथिगण विराजमान हैं।

अमृत – सूची

१.	ब्रह्मा बाबा द्वारा शिव बाबा की श्रेष्ठ शिक्षाएं	१
२.	कैसे थे ब्रह्मा बाबा (सम्पादकीय)	२
३.	वो दिन भी कितने प्यारे थे	६
४.	ब्रह्मा बाबा तू गुणों की अनुपम खान	९
५.	मैंने बाबा से क्या-क्या सीखा	१०
६.	सर्व के सहयोग से सुखमय संसार	११
७.	कामान्धता	१२
८.	गीत	१३
९.	बाबा ने मुझे उड़ता पंछी कैसे बनाया	१४
१०.	फ़रिश्ते का इशारा—'फरिश्ता भव'	१७
११.	स्मृति दिवस कर्मातीत बनने का प्रेरक	१८
१२.	विचारों का व्याकरण	२०
१३.	निश्चिन्त	२२
१४.	हे आदि देव महान!	२२
१५.	सहयोग निर्माण की दस सूत्र विधियां	२५
१६.	सचित्र सेवा समाचार	२८
१७.	सर्व के हृदयों को शीतल करने वाली दादी हृदय मोहिनी	२९
१८	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३२

नव वर्ष सुख वर्ष

(ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

तन के होश से ज्ञान के आगोश तक आज तलक हर वर्ष,
सुखमय हो, हो मंगलमय, हर बार हर नव वर्ष,
चाहा यही कहा और सुना यही हर वर्ष सहर्ष,
पर देखा होते दुःखी जग में बढ़ते रहे संघर्ष।
करते मुख से बात नई अन्दर वही पुरातन प्रति वर्ष,
आओ इस बार सच में मन से नूतन बन जाएं।
सुख दें सुख लें सुखमय बनें और बनाएं।
ऐसी करें, कमाल नव वर्ष सुख वर्ष हो जाए।।
पहले करें 'हम' स्वाहा स्व का किचड़ा, आओ फिर तुम भी कर दो स्वाहा,
यह लो मेरा हाथ! बढ़ा दो खुशी से तुम भी अपनी बांह।
शुद्ध हाव, शुभ भाव, स्नेहिल संकल्पों की सुखकारक राह,
निहारें निशदिन पल-पल रखता रोम-रोम एकता की चाह।
बिखर गए जो माणक शुभ चिन्तन के आओ उन्हें बटोरें,
बात नहीं बोलों की...सुखद कर्मों से आओ पिरो लें।
जाने कौन क्षण श्वास थमें औ पलक मूँद जाएँ,
आओ अन्त से पहले प्रारम्भ..."मिलन का" कल्प में नूँध जाएं।
अन्तिम इस युग का सुखमय का प्रथम बन जाए।
ऐसी करें कमाल नव वर्ष सुख वर्ष हो जाए।।
भरे बूँद-बूँद घट, बने जन-जन से जग,
बने दिन-दिन वर्ष बने पग-पग मग।
सुखों का घट भर, सुखमय मग पर महसूसता से छलकाएं,
आओ देवें सहयोग ऐसा दुख के बादल सब छट जाएं।
सुख युग के स्वागत हेतु सुख वर्ष को सजाएं।
ऐसी करें कमाल नव वर्ष सुख वर्ष बन जाए।।
पहले करें 'हम' स्वाहा स्व का किचड़ा, आओ फिर तुम भी अपना बाह।

ब्रह्मा बाबा द्वारा शिव बाबा की श्रेष्ठ शिक्षाएं

- बच्चे, फरिश्तों के समान अव्यक्त और प्रकाशमान बनो
- बच्चे, शुभ-चिन्तक बनो और शुभ-चिन्तन में रहो
- बच्चे, हिम्मतवान बनो और कदम सदा आगे बढ़ाते चलो
- बच्चे, लक्ष्य सामने रखो और दैवी लक्षण धारण करते चलो!
- बच्चे, ज्ञानवान और गुणवान बनो और गुण दान करो!
- बच्चे, निन्दा करने वाले को भी अपना मित्र समझो!
- स्वदर्शन चक्र को याद करने से चक्रवर्ती राजा बनोगे।
- बच्चे, डबल दानी बनने से डबल ताजधारी बनोगे।
- दे (विकारों का) दान तो छूटे ग्रहण (माया का) काम महाशत्रु है। क्रोध एक भूत है।
- देह-अभिमान पतन की जड़ है, आत्माभिमान उन्नति की सीढ़ी है।
- निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो।
- आत्मा को परमात्मा मानना गोया परमात्मा का न मानना है।
- विकारों रूपी विष को पीना और पिलाना अब बन्द करो।

कैसे थे ब्रह्मा बाबा

प्रजापिता ब्रह्मा, जो १८ जनवरी, १९६९ को अव्यक्त हुए, के साकार जीवन-काल की विशेषताएं अनुपम और अवर्णनीय थीं। फिर भी जब-कभी किसी को उनमें से कुछेक विशेषताओं का साक्षात्कार कराना होता है तो मन दुविधा में पड़ जाता है कि पहले किस विशेषता का उल्लेख करें क्योंकि वास्तव में तो वे सभी विशेषताएं महत्वपूर्ण थीं। अतः उन्हें सिल्सिलेवार बताने का यत्न करने की बजाय वैसे ही स्वाभाविक रूप से बताने में सुविधा होगी।

सदा कृपा दृष्टि और कृपा-वृष्टि

किसी भी महान व्यक्ति की महानता का एक प्रतीक यह होता है कि वह हीन-दीन लोगों पर दया करता है। वह उन्हें भी अपनाता है जिन को सारा जग दुत्कारता या ठकराता है। जो असहाय हों, उन्हें वह सहारा देता है और जो निर्बल हों, उनको वह बल देता है। आर्थिक रूप से कोई कमज़ोर हो उसे भी कोई धन दे देता है परन्तु जिसका साथ सारा जग छोड़ दे, उसका साथ देना, जिसे कोई न पूछता हो, उसे आत्मीयता देना, जिसका कोई न हो उसका होकर रहना—यह कोई विरला ही करता होगा। फिर एक-दो की बात तो अलग है, हर ऐसे व्यक्ति को जो अशान्त हो, दुःखी हो, संसार से थका हुआ हो, उसे शान्ति और सुख देना—यह सेवा तो कोई भी नहीं कर सकता क्योंकि अशान्त लोगों से तो दुनिया ही भरी पड़ी है।

यदि इस भूमिका में देखा जाये तो ब्रह्मा बाबा ने तो कमाल ही कर दी। जिन्हें संसार के अन्य लोग अपठित, अशिक्षित, असभ्य एवं बुद्धिहीन या अल्प-बुद्धि मानते थे, ब्रह्मा बाबा ने तो उन्हें भी ईश्वरीय ज्ञान एवं दिव्य पुरुषार्थ की सूक्ष्मताएं दर्शायीं। जिनके पास न धन था न मान, न विद्या न व्यवसाय, न कला न कौशल, बाबा ने उन्हें भी ईश्वरीय विरासत का अधिकारी बनने के पुरुषार्थ के लिये मार्गप्रदर्शना दी। जिन्हें अन्य कोई धमाचार्य मंद-बुद्धि या निकृष्ट संस्कारों वाला अथवा ऐसा पतित मानते थे कि जिसे सुधारा ही न जा सकता हो, बाबा ने उनकी ओर भी ध्यान दिया, उन पर भी कृपा दृष्टि रखी तथा उन पर भी कृपा-वृष्टि की।

बाबा ने केवल उन्हें अपनाया और पढ़ाया ही नहीं बल्कि ईश्वरीय ज्ञान पढ़ाने के कार्य में सदा आदम्य उत्साह प्रदर्शित किया और उत्कृष्ट परिश्रम किया। एक-एक को महान बनाने के लिये उन्होंने पूरी रुचि ली। किसी के भी जीवन को पवित्र बनाने और संस्कारों को बदलने के कार्य में वे कभी थके नहीं, निरोत्साहित या निराश नहीं हुए। बार-बार समझाने-सुधारने के यत्न में वे लगे ही रहे। यदि कोई व्यक्ति स्वयं अपने संस्कारों को बदलने में स्वयं को असमर्थ मानने लगा तो भी बाबा ने उसकी हिम्मत ही बढ़ाई; उसे यह नहीं कहा कि—"तुम तो पवित्र बन ही नहीं सकते; तुम यहां से भाग जाओ और व्यर्थ में हमारा समय मत गंवाओ।" हां, यदि उन्होंने यह देखा हो कि इस व्यक्ति में बदलने की पूरी भावना ही नहीं है, न यह पुरुषार्थ करता है और न ही यह निश्चयवान है, तो बात अलग है। वर्ना बाबा सदा हरेक का उमंग-उत्साह बढ़ाते हुए उन्हें महानता के शिखर पर ही ले चलने की महान् सेवा में लगे रहे।

बाबा की सदा यही मान्यता बनी रही कि निकम्मी से निकम्मी चीज़ को भी काम में लगाया जा सकता है और निकृष्ट वस्तु (Waste) को भी श्रेष्ठ (Best) बनाया जा सकता है। अतः जिन्हें अन्य लोग निकृष्ट मानते थे, बाबा ने उन्हें श्रेष्ठ बनाने की कोशिश की। इसके लिये उन्हें कड़ी आलोचना, विरोध, और अपयश का भी सामना करना पड़ा परन्तु फिर भी उन्होंने किसी को 'पतित' या 'पतिता' मान कर छोड़ नहीं दिया, रूहानी सहारा ढूंढने वाले किसी व्यक्ति से मुख मोड़ नहीं लिया और लोगों की निन्दा से डर कर कभी यह सेवा छोड़ नहीं दी।

इतना ही नहीं, उन्होंने अपठित और अशिक्षित व्यक्तियों को भी ईश्वरीय ज्ञान और योग में इतना परिपक्व और अनुभवी बना दिया कि बड़े-बड़े बुद्धिजीवी और विद्वान भी उनके ज्ञानमय जीवन, उनकी योगी वृत्ति, दृष्टि और स्थिति और उनके

जागृत विवेक का लाभ लेने को लालायित हो उठे। उन्होंने उनका जीवन इतना महान बना दिया कि महात्मा लोग भी उनकी सहनशीलता, मधुरता, नम्रता, सेवा-भाव, स्नेह, सात्विकता, निष्ठा आदि से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। अतः एक-एक व्यक्ति को महान बनाने के लिए जो उन्होंने हरेक पर परिश्रम किया, उसका कोई भी उदाहरण संसार के इतिहास में मिलना कठिन है।

इस पर भी किसी एक-आध व्यक्ति को दो-चार साल आध्यात्मिक मार्ग-प्रदर्शना देने की बात अलग है परन्तु जीवन-पर्यन्त सैंकड़ों-हजारों व्यक्तियों के संस्कार-परिवर्तन का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेना और रात-दिन, सर्दी-गर्मी, सुविधा-असुविधा को न देखते हुए अथक होकर सहर्ष इस कर्त्तव्य में निरन्तर जुटे रहना—यह विशेषता तो केवल ब्रह्मा बाबा ही के जीवन में देखने को मिलती है। विशेष बात यह कि उन्होंने यह कार्य भू-खण्ड के एक ऐसे भाग से प्रारम्भ किया कि जहां के लोगों पर कई संस्कृतियों, कई धर्मों और कई परम्पराओं की परतें मज़बूती से चढ़ी हुई थीं। ऐसे लोगों में भी महिलाओं का जो स्थान था, वह तो 'पिंजरे-के-पक्षी' जैसा था। उन पर भी जो उन्होंने अमृत वर्षा की और उन्हें योगिन बनाने का कार्य किया, वह तो कोई सोच ही नहीं सकता था। उनके जीवन में उन्होंने जो नई रूह फूंकी अथवा उनके जीवन में चन्दन-जैसी शीतलता और सुगन्धि और कमल-जैसी निर्लिप्तता और हंस-जैसा जो सद्विवेक भरा उस-जैसे कार्य का तो कोई भी उदाहरण संसार की किसी भी संस्कृति, धर्म-परम्परा या साहित्य में उपलब्ध नहीं है।

प्यार-भरी शिक्षा

उपरोक्त के अतिरिक्त बाबा की एक अन्य अनुपम विशेषता यह थी कि उन्होंने जन-जन के संस्कार-परिवर्तन के कार्य को जिस कला और कुशलता से किया, उसकी भी मिसाल ढूंढना मुश्किल है। संसार में ऐसे कई लोग हुए हैं जिनकी शिक्षा-नीति इस मान्यता पर आधारित रही है कि डांट-डपट और दंड-डंड के बिना किसी को सुधारना-संवारना कठिन होता है। ऐसे लोग जब शिक्षक और आचार्य का कार्य करते हैं तो वे अगर डंडे का प्रयोग न भी करें तो वे अपनी वाणी का डंडा तो मारते ही हैं। जब कोई शिष्य आज्ञा भंग करता है, अनुशासन तोड़ता है, बात नहीं मानता, सम्मान नही देता अथवा बार-बार समझाने पर भी समझता नहीं है या बहुत कोशिश करने पर भी सुधरता नहीं है तो वे एक-न-एक दिन उस पर क्रोध में बरस पड़ते हैं और उन्हें कुछ-का-कुछ कह जाते हैं।

दूसरी प्रकार के लोग वे होते हैं जो किसी को डांटते-डपटते नहीं, बल्कि प्यार ही देते हैं। परन्तु वो इस प्रकार से प्यार देना नहीं जानते जिससे वे किसी को सुधार भी सकें बल्कि उनके प्यार से कई बार लोगों की आदत बिगड़ ही जाती है और वे सीखने की रेखा से बाहर हो जाते हैं। प्यार करने पर भी जब कोई उनकी बात नहीं मानता तो वे असहाय होकर एक ओर खड़े हो जाते हैं अथवा पश्चाताप करते हैं कि उन द्वारा अधिक प्यार देने का ही यह परिणाम हुआ है। ऐसी स्थिति आने पर उनके मन में प्यार की बजाय घृणा स्थान ले लेती है।

इस प्रकार प्यार द्वारा किसी को शिक्षा देकर सुधारना तो एक बहुत बड़ी कला है जिसे कोई विरला ही जानता है। किसी को सम्मान देते-देते उस सम्मान के योग्य व महान बना देना-यह कार्य कोई साधारण मनुष्य नहीं कर सकते। **किसी से घृणा किये बिना, उसे दुत्कारे बिना, उसके सम्मान को चोट पहुंचाये बिना उसे गायन-योग्य अथवा श्रेष्ठ बना देना एक बहुत बड़ा उपकार है जिसकी तुलना अन्य किसी भी प्रकार की सेवा से नहीं की जा सकती। किसी को बार-बार समझाने के बाद भी जब वह नहीं समझता तब भी अपने मन में उसके प्रति घृणा और क्रोध का भाव न पैदा होने देना और प्रेम तथा कल्याण की भावना को निरन्तर बनाए रखना—यह महानता की चरम सीमा है। ब्रह्मा बाबा में यह विशेषता स्पष्ट दिखाई देती थी। उनके सम्पर्क में आने वालों ने इसका अनुभव किया था।**

३. प्रवृत्ति में निवृत्ति

ब्रह्मा बाबा ने शिव बाबा की शिक्षा को स्पष्ट करते हुए यह कई बार कहा कि हम शुद्ध प्रवृत्ति मार्ग के अनुगामी हैं और कि हम निवृत्ति मार्ग वाले संन्यासी नहीं हैं। उन्होंने इस बात को कई बार स्पष्ट किया कि यह संसार ही प्रवृत्ति का बना हुआ है और कि प्रवृत्ति अथवा कर्म को छोड़ना अस्वाभाविक, कृत्रिम और गलत है। अतः यद्यपि योग-निष्ठ स्थिति उनका ध्येय था, तथापि

उन्होंने कर्म का संन्यास नहीं किया बल्कि वे और भी अधिक कर्म में प्रवृत्त हो गए। हां, उन्होंने कर्म को योग-युक्त होकर करने की शिक्षा दी। **परन्तु सेवा रूपी कर्म को तो उन्होंने एक प्रमुख स्थान दिया। यहां तक कि सेवा के लिए 'न' कहने वाले को 'नास्तिक' कह दिया और सेवा को योगी जीवन का 'ताज' बताया तथा 'कर्म' (श्रेष्ठ कर्म) को 'स्वर्ग की सीढ़ी' के रूप में वर्णित किया, 'कर्म' को छोड़कर बैठने वाले को 'आलसी' और 'उद्यम-हीन' माना।** कर्म की ऐसी घुट्टी पिला कर उन्होंने वृद्धजनों के जीवन में भी एक नयी जवानी ला दी और जिसकी जवानी को ज़ंग (Rust) लग रहा था, उनकी जवानी में भी एक नई चमक ला दी तथा हरेक में एक ऐसा उमंग और उत्साह भर दिया कि चारों ओर 'सेवा....सेवा...सेवा...' का नारा लेकर सब रात-दिन सेवा में जुट गए गोया सेवा उनके इस नये जीवन की खुराक बन गई। परन्तु, हां, बाबा ने यह सावधानी दे दी कि **सेवा का कार्य करने के लिए साधनों को नहीं मांगना बल्कि साधना करना, 'नाम' और 'उपाधि' के लिए** लालायित **नहीं होना क्योंकि यह भी एक प्रकार से भीख मांगना है।** सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने यह समझा दिया है कि किसी से कभी भी पैसा मांगने के कर्म को मरने से भी बदतर समझना और प्रवृत्ति में रहते हुए भी निवृत्ति में रहना।

यह बात ध्यान देने के योग्य है कि उन्होंने यह भी नहीं कहा कि निवृत्ति में रहते हुए थोड़ी-बहुत प्रवृत्ति कर लेना अथवा कि सब-कुछ त्यागने के बाद भिक्षा मांग अपना जीवन-निर्वाह करना बल्कि उन्होंने यह भली-भांति स्पष्ट कर दिया कि "प्रवृत्ति में रहते हुए निवृत्ति में रहना" और किसी से पैसा मांगने की बात तो अलग रही, उससे पैसे की मन से इच्छा करना भी भीख मांगने के तुल्य है और सच्चे योगी के लिए सर्वथा वर्जित है।

बाबा ने स्वयं ऐसा ही जीवन व्यतीत किया। वे प्रवृत्ति में होते भी निवृत्ति में रहे। अर्थात सेवारूपी कर्म करते हुए भी देह से न्यारे, लौकिक कामनाओं में निवृत्त, निश्चिन्त और उपराम चित्त रहे। पैसा मांगने की बात का तो प्रश्न ही नहीं उठता, वे पैसे को हाथ लगने पर भी चौंक जाते थे। कर्म में अति व्यस्त होने पर भी वे ईश्वरीय मस्ती में मस्त रहते थे। कार्य करते हुए भी वे स्वयं को एक माध्यम, प्रन्यासी अथवा निमित्त-मात्र समझते थे। संसार में कितने लोग ऐसे हुए हैं जो इस प्रकार कर्म में प्रवृत्त और साथ-ही-साथ निवृत्त रहे हों?

स्वामी दयानन्द ने संन्यास किया और निवृत्ति मार्गीय हो गए। फिर जब अपना ही सत्यार्थ प्रकाश छपवाने के लिए उन्होंने अजमेर में प्रैस लगा लिया तो उससे तंग आकर आखिर उन्होंने कह ही दिया—कि हाय! हम तो संन्यासी होने के बाद भी गृहस्थी हो गये।

स्वामी विवेकानन्द ने भी संन्यास लिया परन्तु रामकृष्ण आश्रम की स्थापना के लिए उन्हें पैसे इकट्ठे करने पड़े और आखिर उनके मुख से भी यही शब्द निकले—कि हाय, संन्यासी होकर भी हमें पैसे को हाथ लगाना पड़ा।

परन्तु हमने ब्रह्मा बाबा के जीवन में प्रवृत्ति व निवृत्ति का ऐसा सामंजस्य और सन्तुलन देखा कि जिसका कोई और उदाहरण नहीं। जितना ही वे कर्म में लगे रहे, उतना ही वे कर्म से न्यारे बने रहे और अपने इस जीवन में उन्होंने दूसरों को भी ऐसा बना दिया।

बहुमुखी प्रतिभा

ब्रह्मा बाबा के जीवन में ध्यान आकर्षित करने वाली एक दूसरी विशेषता यह थी कि जिन प्रतिभाओं की उनमें साधारणतः आशा नहीं की जा सकती थी, वे भी उनमें थी। उदाहरण के तौर पर उन्होंने लौकिक दृष्टि से कोई उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की थी और उनके विद्याध्ययन-काल में कोई बहुत उच्च कोटि का सुन्दर एवं आकर्षक रीति से एवं कलापूर्ण ढंग से साहित्य भी नहीं छपता था परन्तु साहित्य प्रकाशन के विषय में उनके जो विचार थे वो आधुनिक काल में, जबकि मुद्रण कला बहुत प्रगति कर चुकी है, हम व्यक्त होते देखते हैं। मुझे याद है कि एक बार बाबा ने मेरे पास एक लघु पुस्तिका भेजी थी जिसमें कागज़ पर पहले ग्राउण्ड रंग (Ground Colour) छपा हुआ था और उसके ऊपर दूसरे रंग में लेख छपा हुआ था। एक अन्य अवसर पर बाबा ने छपाई का एक दूसरा नमूना भेजा था जिसमें प्लास्टिक पेपर पर बहुत सुन्दर ढंग से रंगीन चित्र छपे हुए थे। संयोग ऐसा हुआ कि बाबा ने जो पहली प्रकार का नमूना मेरे पास भेजा, उससे प्रायः मिलते-जुलते प्रकार से मैं हिन्दी और अंग्रेजी में 'महान अन्तर' की किताब छपवा चुका था जिसकी टाइप भी वैसी ही बड़ी थी जैसी बाबा चाहते थे और जिसमें ग्राउण्ड कलर भी छपा था।

इस पर बाबा ने लिखा था कि तुम्हें ठीक विचार आया है परन्तु दूसरी प्रकार की छपाई बहुत महंगी होने के कारण हम नहीं छपवा सके। किन्तु ऐसे कई उदाहरण दिये जा सकते हैं जिससे इस बात का आभास होता है कि मुद्रणकला और सौन्दर्य के बारे में भी बाबा के श्रेष्ठ विचार थे। ऐसी ही बात चित्रकला के और संगीत कला के बारे में भी कही जा सकती है।

पहली बार जब कलाकार सृष्टि-चक्र का चित्र रंगीन आकृति में बना रहा था तब भी बाबा ने उन रंगों को बदलवा दिया और उन्होंने जिन रंगों का सुझाव दिया, वे भीने-भीने (Light), अर्थ-युक्त और अधिक आकर्षक थे। इसी प्रकार श्री लक्ष्मी और श्री नारायण व श्रीकृष्ण के चित्र भी जब बने, तब भी बाबा ने उनकी मुखाकृति एवं उनके वस्त्रों व साज-सज्जा के बारे में कई सुझाव दिये जिन्हें चित्रकार व्यवहृत नहीं कर पाया। परन्तु उस समय बाबा ने उन चित्रों के बारे में जो समीक्षा प्रस्तुत की और जो विचार अभिव्यक्त किये उनको सुनकर कोई भी कह सकता कि बाबा कलाकार से भी अधिक सौन्दर्य, कल्पना शक्ति और कलात्मक दृष्टि के धनी हैं।

गीतों व धुनों के बारे में तो बाबा को प्रभुत्व प्राप्त था। उसके विषय में तो उनकी सूझ की क्या कहें! जब कोई गीत बज रहा होता, तब उस समय बाबा के मुखमण्डल पर अन्तर्मन के विचारों की झलक देखते ही बनती थी। ग्रामोफोन रेकार्ड तो गीत प्रस्तुत करता था और बाबा का चेहरा उसका भावांकन अथवा चित्रांकन पेश करता था। तब वे जिस तरह नेत्रों को कोण देकर देखते, चेहरे पर उनके जो मुस्कान उभर आती, लबों तथा अन्य ज्ञानेन्द्रियों से मन के जो उद्‌गार प्रगट होते उससे यह स्पष्ट झलक मिलती थी कि उनका हृदय किस प्रकार से लय, तान, शब्द, भाव इत्यादि की सूक्ष्मताओं को कलात्मक दृष्टि से पहचानता है यद्यपि वे कोई संगीतकार नहीं। इस पर भी वे उनका जो दिव्य अर्थ करते, वह तो अनुपम और अद्वितीय ही होता जो जीवन को ही गीतमय बना देता। स्वयं उन्होंने इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के प्रारम्भ काल में जो कुछ गीत लिखे अथवा मातेश्वरी को गीत गाने की सम्मति दी अथवा बाद में भी गीतों का योग-निष्ठा से जो मेल जोड़ा, उससे स्पष्ट है कि संस्कार रूप से गीतों की आनंन्द लहरी उनमें समाई हुई थी। उनकी सभाओं के अन्त में भी जब कोई गीत या कविता गाना चाहता था तो उसके लिए वे कई बार सम्मति दे देते थे। **इस प्रकार के कला-प्रिय एवं कलात्मक प्रतिभा वाले व्यक्तित्व के मालिक थे। और तो क्या शिव बाबा उनके मुखारविन्द द्वारा ज्ञान देते थे उसका नाम भी 'प्रवचन', 'उपदेश', 'व्याख्यान', 'भाषण', 'सम्बोधन' इत्यादि न होकर 'मुरली' ही प्रसिद्ध हुआ जो कि अनेक स्वरों वाला एक वाद्य अथवा साज़ है।**

ऐसे ही नृत्यकला तथा भवनकला, वाककला, लेखनकला, सम्वादकला इत्यादि के बारे में भी कहा जा सकता है। उनके सम्पर्क में आने से यह स्पष्ट मालूम होता था कि इनमें बहुमुखी प्रतिभा है। और कि विशेष आत्माओं में से भी ये अति विशिष्ट और अति विशिष्ट में से भी ये सर्वश्रेष्ठ आत्मा हैं। विश्व की ऐसी महानतम दिव्य आत्मा के साथ हम आत्माओं का सम्बन्ध होना एक अत्यन्त सौभाग्यपूर्ण बात है।

ब्रह्मा बाबा में जो विशेषताएं थीं, उनमें से यदि एक-एक वर्णन करने लगें और यदि उनके साकार जीवन-काल के वृत्तान्तों का उल्लेख करने लगें तो पुस्तकें बन जायेंगी क्योंकि वे तो अनेकानेक प्रतिभाओं की प्रतिमूर्त्ति थे-ऐसे थे ब्रह्मा बाबा।

—जगदीश

कानपुर (किदवी नगर) सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित ज्ञान-योग भट्ठी का उद्‌घाटन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भ्राता रामसंजीवन पाण्डेय द्वारा किया गया, साथ में अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

"वो दिन भी कितने प्यारे थे"

दादी प्रकाशमणीजी
(मुख्य प्रशासिका)

आज 18 दिसम्बर को सवेरे जैसे ही मैंने दादीजी के कमरे में प्रवेश किया तो एक दिव्य-दृश्य देखा। दादीजी की वह सौम्य मूर्ति, कैसा अलौकिक तेज है इनमें, कैसी-अलौकिक कान्ति, मुख मण्डल पर अलौकिक आभा, कैसा अनूप रूप है इनका। दादीजी के गम्भीर, सागर-जैसे नेत्रों से लग रहा था कि वह प्रभु-प्रेम-सागर में समाई हुई हैं। उनका योग युक्त-व्यक्तित्व प्रभुचिन्तनका मौन निमन्त्रण दे रहा था। जैसे ही उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ी तो अनुभव हो रहा था कि उनके दृष्टि-पथ से मुझ पर प्रेम-सुधा की वर्षा हो रही है। लगता था उनका तन कहीं और है और मन कहीं और है।

सचमुच दादीजी प्रभुचिन्तन की निरन्तर साधना से आध्यात्मिक शक्ति की भण्डार बन चुकी हैं। उनकी तेजस्वी वाणी तो निरन्तर माया की निस्सारता समझाने तथा प्रभुका गुणगान करने में लगी रहती है। उनकी आत्मा-ज्योति इतनी प्रखर है कि उनके सहचर्य मात्र से दूसरी आत्माओं की मलिन ज्योति भी प्रज्वलित हो जाती है। दादी प्रकाशमणी जी प्रकाश-स्तम्भ बनकर अनवरत परिश्रम से भवसागर में थपेड़े खाती लाखों चैतन्य नौकाओं को प्रथ-प्रदर्शन करती है। उनके नयनों से माँ का प्यार और वात्सल्य हर आत्मा पर बरसता है।

तो दादीजी की अनोखी मस्ती देखकर मैंने पूछा, दादीजी, आज आप कहां खोई हुई हैं? उन्होंने कहा आत्म भैया, सचमुच वो दिन अति प्यारे थे, जब बाबा साथ हमारे थे। न जाने क्यों आज बाबा के जीवन की एक-एक घटना चित्रपट की तरह मेरी आंखों के सामने आ रही है। इसी संदर्भ में दादीजी के साथ जो मेरा वार्तालाप हुआ वो उन्हीं के भावों में आपके सामने रखता हूं।

प्र.:– दादीजी, आपको वो दिन क्यों प्यारे लगते हैं?

उ.:– आत्म भांई, भला वो दिन हमें क्यों नहीं अति प्यारे लगेंगे जबकि हर पल अपने प्यारे बाप, शिक्षक तथा सतगुरू के साथ बीतता था। उस अलौकिक पालना ने ही हमें अन्धकार रूपी रात्रि से रोशनी रूपी दिन में लाया। प्यार के सागर बाप ने हम बच्चों को पुरानी दुनिया से पार अपनी नई दुनिया में बसाया था। कहते हैं बाप मिला तो जहान मिला लेकिन जहान तो क्या हमें तो तीनों लोक प्राप्त हुए थे। सचमुच बाब तो प्रेम के अखण्ड स्त्रोत थे। उनका मुसकराता हुआ चेहरा, दिव्य ज्योतियुक्त आंखें, मीठी-मीठी बातें, सहज व्यवहार सभी के मन को हर लेता था। तो उन दिनों में बाबा के व्यक्तित्व से झलकता हुआ प्यार और स्नेह की किरणें हमें अनवरत मिलती थीं। तो ऐसे अनोखे दिन क्यों नहीं अति प्यारे लगेंगे।

प्र.:– दादीजी, क्या आप उस अलौकिक पालना के कुछ अनुभव सुनायेंगी?

उ.:– हां, क्यों नहीं, बाबा ने कराची में जब हमें भट्ठी में रखा तो त्यागमूर्त भी बनाया और साथ में हमें राजकुमारियों की तरह भी पालना दी। बाबा सभी को समान परवरिश देते थे। अगर कोई साहूकारी से आता था तो बाबा अपनी अलौकिक पालना से उनका साहूकारी का भान भुलाता था और गरीबों को महाराजा तथा महारानी बनने का नशा चढ़ाते थे। बाबा के पास गौशाला में गौवें थीं, तो बाबा हमें खूब अच्छी तरह से दूध मख्खन खिलाते थे।

लेखक दादी जी से वार्तालाप करते हुए

फिर तो विचित्र बेगरी पार्ट भी शुरू हुआ। एक तरफ बेगरी पार्ट तो दूसरी तरफ बिमारी का पार्ट चला। ठंडी के मौसम में ठंडी बढ़ती गई, जिससे हरेक को कोई न कोई बीमारी आई। ऐसी आर्थिक परिस्थिति थी कि हम दवाईयां भी नहीं मंगा सकते थे। तो बाबा हमें रूहानी इन्जेक्शन लगाते थे या अव्यक्त बाबा के कभी-कभी ऐसे प्रोग्राम मिलते थे जिससे हम एकदम ठीक हो जाते थे। मुझे याद है मेरे जीवन में ऐसी-ऐसी घटनाएं आई जिसमें बाबा ने एकदम साधारण दवाई देकर मुझे नया जीवन दिया। बाबा हमें सिखाते थे कि कैसे योगबल से कर्मभोग, सहनशील बनकर चुक्तु करें और विजयी बनें। दवाइयां खाने से तो और भी देहभान बढ़ता है। इसलिए दवाई के बजाय रूहानियत की शक्ति से बीमारी को जीतो।

बाबा हमें सावधानी भी देते थे—

मुझे याद है हम कुमारियां करॉची में मम्मा के साथ कूंज भवन में रहती थीं। बाबा, बाबा-भवन में रहते थे। हम सभी का अत्यन्त प्यार बाबा से भी था और मम्मा से भी था। लेकिन बाबा जब देखते थे कि बच्चियों की मम्मा के प्रति ममता बढ़ती जा रही है, तो हमें सिखाने के लिए बाबा 2-3 दिन हमारे पास आते ही नहीं थे। हमें भी लगता था इतने दिन से बाबा हमारे पास क्यों नहीं आए। तो बाबा कहते थे कि बच्ची, बाबा नहीं आयेगा, तुम लोगों का तो मम्मा से ही बहुत प्यार है। फिर बाबा कहते थे कि तुम्हें न ब्रह्मा बाबा के या सरस्वती के देह में फंसना है। किसी भी देहधारी से विशेष प्यार नहीं रखना है। ऐसी सावधानी देकर कहते थे तुम्हें तो विदेही बन विदेही बाप को याद करना है न कि किसी देहधारी को।

बाबा मुझे प्रति दिन पत्र लिखते थे—

जब हम सेवा स्थान पर सेवार्थ रहती थीं तो हर रोज़ मुझे बाबा के हस्त कमलों से लिखा हुआ पत्र आता था। ऐसा कोई दिन न होगा जिस दिन पत्र न मिला हो। कई बार सोचती थी कि आज पत्र में बाबा से ये बात पूछूंगी, तो पूछने के पहले ही बाबा का प्रेरणा का पत्र मिल जाता था। बाबा जैसे कि हर बात पहले से ही लिख देते थे। एक दिन भी मैं बाबा को पत्र न लिखूं तो बाबा को ओना होता था कि आज बेटी का पत्र क्यों नहीं आया। इसलिए मैं भी हररोज़ बाबा को पत्र लिखती थी। सदा ऐसा अनुभव होता था कि मैं मधुबन में ही हूं, सदा बाबा मेरे साथ हैं। उठते, बैठते, खाते, चलते, फिरते रोज़ नये-नये विचित्र अनुभव होते थे।

बाबा हमें डबल टोली खिलाते थे—

हमने बाबा को 1966 में सुखसागर बिल्डिंग, बम्बई में बुलाया था। बाबा ने हमारा निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार किया, सचमुच उस समय तो खुशी का ठिकाना न था। बाबा के आने का समाचार चारों ओर फैल गया था। उस समय ऐसी आत्माएं भी आयीं थी, जो कभी भी पहले क्लास में आती थीं, बाबा को देखते-देखते वो एकदम परिवर्तन हो जाते थे। हमने तो यह भी देखा जो कल न मानने वाला अथवा बांधेली गोपियां प्यार से अपने पतियों को ले आती थीं, तो बाबा रूहानी दृष्टि से शक्तियों रूपी सुक्ष्म टोली और अपने कर कमलों से स्थूल टोली (प्रसाद) खिलाते थे, तो सचमुच वो शीतल बन जाते थे और पवित्रता का व्रत लेते थे। पुराने बच्चों के रग-रग में बाबा की ये अलौकिक पालना समाई हुई है। बाबाका वो टोली खिलाना तो सभी को खुशी में नचाता था।

प्र.:— दादीजी, आपको बाबा प्यार से क्या-क्या बोलते थे?

उ.:— बाबा का हृदय तो प्रेम और वात्सल्य से भरपूर था। प्यार का सागर जब उमड़ता था तो प्रेम भरे बोलों की हमपर वर्षा होती थी। कभी तो बाबा कहते थे लाडली बेटी, कभी कल्प-कल्प की बिछड़ी हुई सिकीलधी बच्ची, कभी नूरे रतन तो कभी मेरे विजयी माला की मणियां, मस्तक- मणियां, कभी मेरी भविष्य में देवात्माएं बनने वाली शिवशक्तियां, कभी कहते थे सच्ची गीता, कभी सच्ची सीता, तो ऐसे मीठे बोल सुनते ही मन मोर नाच उठता था। सचमुच मेरे कानों में तो वो आवाज़ आज भी गूंजती है।

प्र.:— दादीजी, आपने बाबा के जीवन में क्या-क्या देखा?

उ.:— सर्वशक्तिवान परमात्मा की सर्व शक्तियां और सर्व गुणों का प्रत्यक्ष प्रमाण था बाबा का जीवन। संसार की सभी समस्याओं का समाधान था बाबा का जीवन। कभी तो विचित्र शक्तियों का जादू अनुभव होता था। कई बार मुझे उनका फरिश्ता रूप दिखाई दिया। लगता था कि सारी दुनिया का बाप दुनिया के बीच खड़ा है, सभी उस फरिश्तों के राजा का साक्षात्कार कर रहे हैं। भगवान के रूपों का भक्तिमार्ग में वर्णन किया है, वह रूप मुझे उन्हों में दिखाई देते थे, चाहे आकारी में, साकारी में, कभी विष्णु के रूप में, कभी श्रीकृष्ण के रूप में, कभी-कभी धर्मपिताओं का पिता के रूप में, ये सब मुझे अनुभव होता था।

प्र.:— दादीजी, आपको बाबा ने क्या-क्या सिखाया?

उ.:— **(1) बाबा ने मुझे एकानामी सिखायी-**

सन् 1954 जनवरी को बाबा ने हमें इलाहाबाद में महा कुंभ मेले पर सेवार्थ भेजा। तो वहां जाकर हमने प्रैस वालों की बहुत प्यार से सेवा की तो उन्होंने हमें दो लाख पर्चे छपवाकर दिये। उन दिनों में बेगरी पार्ट होने से बाबा ने हमें एकॉनामी सिखाई। बाबा कहते थे—सभी एक टाईम का भोजन बन्द करके और सौ रुपया बचाओ। फिर उस सौ रुपये से टिकिट खर्च

करके, पर्चे छपवाके बाबा की सर्विस करो। कुंभ मेले में हम 11 भाई-बहनों का ग्रुप गया था। तो खाने के लिए हम दो पैसे का टमाटर और एक किलो आलू लाकर रस में सब्जी बनाते थे और फुलके के साथ एक टाइम का खाना खाते थे या किसी दिन खिचड़ी के रस में टमाटर डालकर फिर उसके साथ खाते थे। इस तरह हम कम से कम खर्च में दो रोटी खाते थे और खुशी से सुबह से रात्रि तक बाबा की सेवा करते थे।

(2) बाबा ने मुझे एवरेडी बनाया

हमें सेवा पर भेजने के लिए बेगरी पार्ट निमित्त बना, नहीं तो हम सेवा पर जाते नहीं। हर एक-दो मास के बाद हम मधुबन में बाबा के पास आते थे। बाबा हमें 8 दिन के लिए रखते, फिर कहते थे बेटी, अभी बादल भर गए, रिफ्रेश भी हुये तो अभी सेवा पर जाओ।

कभी तो सुबह की 10 बजे की ट्रेन होती थी और आठ बजे कहेंगे क्यों बेटी, क्यों बैठी हो, भागो...अभी भागो। एक घंटे में बाबा भेजते थे। बच्चों का सेंटर छोड़कर,सर्विस छोड़कर एक दिन भी ज्यादा बाबा के पास नहीं रहना है। आये, बाबा से मिले, समाचार सुनाया और बाबा से प्रेरणा ली फिर चले गए सेवा पर। एक दिन में भी बाबा हमें सेवा की ट्रेनिंग देते थे।

प्र.:– दादीजी, आपने ब्रह्मा बाबा से क्या-क्या सीखा?

उ.:– **(1) देह से न्यारे-पन का अभ्यास**–जब हम सेवा समाचार सुनाने के लिए बाबा के पास जाते थे तो अनुभव करते थे कि हम शान्ति के प्रवाह में, शक्ति के प्रवाह में बह रहे हैं। क्योंकि सुनते समय बाबा देह में रहते हुए भी देह से न्यारेपन का गुप्त अभ्यास करते थे। जिससे आत्मा के गुण की गहराई से हमें अनुभूति होती थी। यह अभ्यास करने की विधि गुप्त रीति मैंने बाबा से सीखी। अभी जब भी किसी से मिलना होता है तो मैं यह अभ्यास करती रहती हूं।

(2) आलराउंड बनना–मैंने बाबा को ऑलराउंड पार्ट बजाते हुए देखा है। बाबा खिलाने में, पिलाने में, घुमाने में, खेलने में सबमें रूचि लेते थे। परन्तु यह सब करते हुए भी एक मिनिट में ज्ञानसागर की लहर चलती थी, जैसे कि बाबा इस दुनिया में है नहीं, एकदम सागर की गहराई में रत्नों में बैठा है और कैसे रत्नों से सबको बहला रहा है। ऐसे ही बाबा को एक तरफ ख्याल रहता था कि विश्व कल्याण कैसे हो और दूसरी तरफ विचार सागर मंथन भी होता था, हमें प्रेरणा भी देता था। बाबा के अंगसंग रहकर यह भी कला मैंने सीखी।

(३) बड़ा दिल रखना–जब बेगरी पार्ट चल रहा था, तो हम सेवा-केंद्र पर बाबा की सेवा पर उपस्थिति थे। तो मेरा सदा लक्ष्य रहता था कि मांगना नहीं। क्योंकि बाबा कहते थे– मांगने से मरना भला। इशारा भी न दो। जब हम सच्चे दिल से हड्डी सेवा करते हैं तो स्वतः ही भंडारा भरता है। बड़ा दिल रखने से बाबा आपे ही भरता है। ऐसा संकल्प भी कभी नहीं चलता था कि कैसे चलेगा।

दादी कुमारका जी बम्बई क्लास में बाबा के साथ

(4) सबको सन्तुष्ट करना–कोई व्यक्ति कैसा भी हो, उनको किस युक्तिसे सन्तुष्ट रखना, कैसे चलाना, यह मैंने बाबा से सीखा। कई कहते हैं इनका स्वभाव मेरे से नहीं मिलता, यह मेरे संस्कार के अनुकूल नहीं चलता। लेकिन ऐसा मैं कभी नहीं कहती हूं। जो जैसे संस्कार वाला हो, ऐसे संस्कार वालों से मिलके चलते हुए सन्तुष्ट करना वास्तव में श्रेष्ठता है। यह ऐसा है, वह तैसा है, यह न देखकर उसकी विशेषताओं को देखो और ऐसा उनको चलाओ, जो खुद महसूस करे कि मेरी गलती है।

(5) सबको सम्मान देना–दूसरों को इज्जत देना यह बहुत बड़ा गुण है। दूसरों को प्यार देना, महिमा करना, गुण गायन करना–यही हमें ईश्वरीय पढ़ाई सिखाती है। सर्विस करते-करते बाबा ने मुझे यह ट्रेनिंग दी। जिसके फलस्वरूप हमें इतनी यज्ञ की सेवा दी है। उस ट्रेनिंग के फल के कारण मैं ट्रस्टी बनकर यहाँ सेवा पर उपस्थित हूं।

प्र.:– दादीजी, वर्तमान समय आपका पुरुषार्थ क्या चल रहा है?

उ.:– मेरा पुरुषार्थ सदा यही चलता है कि ब्रह्मा बाप की पूर्ण रूप से कॉपी (Copy) बनूं। अपने सूरत और सीरत से बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए सदा नयनों में बाबा बसा रहे, मुख से बाबा के मधुर महावाक्य निकलें जो सबके

दिलों में लगें और ऐसा महसूस करें कि अब तो समय समाप्ति की ओर तेजी से जा रहा है इसलिए भाग्य-विधाता से अपने भाग्य का अधिकार प्राप्त कर लें।

प्र.:— दादीजी, स्मृति दिवस निमित्त समस्त ब्राह्मण परिवार के लिए आपका संदेश क्या है?

उ.:— यह स्मृति दिवस हमें अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा के चरित्रों की स्मृति दिलाता है। सदा हमें यह स्मृति रहे कि मीठा बाबा वतन में बैठकर हम बच्चों के सम्पूर्ण स्थिति का इन्तज़ार कर रहे हैं।

आज के दिन हमारा एक शुभसंकल्प है कि हमारे सर्व ब्राह्मण बाबा के बच्चे ब्रह्मा बाबा के इन्तज़ार की घड़ियां समीप लाने के लिए अपनी कर्मातीत स्थिति के समीप पहुंचने का नये उमंग और उल्लास के साथ पुरुषार्थ करें।

फलस्वरूप बाबा के प्रत्यक्षता का महानतम् कार्य शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करके वतन की ओर चलें।

इस प्रकार जिनका सम्पूर्ण जीवन पिता-श्री तथा परमात्मा के छत्र-छाया में बीता, जिन्होंने अपने नयनों से भगवान की हज़ारों लीलाएं देखीं सर्व के स्नेह तथा सम्मान की पात्र दादीजी ने अविस्मरणीय स्मृत्तियों का वर्णन किया और वर्णन करते-करते दादी जी और हम बाबा के चरित्रों की यादों में खो गये।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश, आबूपर्वत

'ब्रह्मा बाबा! तू गुणों की अनुपम खान'

पिता श्री ब्रह्मा बाबा! तू गुणों की अनुपम खान।
स्मृतियों के गहरे तल में सुख का भरा जहान।।
भूतल पर भगवान को भी तन प्यारा लगा तुम्हारा,
बैठ के जिसमें शिव ने है रूहों का रूप संवारा।
श्री-मुख से प्रतिपल बहती है ज्ञानामृत की धारा,
पीकर खिलता जीवन बनता कमल फूल सा न्यारा।
ब्रह्मा बाबा कर्म तेरे देते शिव की पहचान—
स्मृतियों के गहरे तल में.....
तुमसा निरहंकारी बाबा कहीं नहीं है देखा,
बैठ झोंपड़ी में लिखा शुभ-श्रेष्ठ कर्म का लेखा।
कष्ट सहनकर खुद तुमने बच्चों के कष्ट मिटाये,
गोद में लेकर आंसू पोंछे, तुमने गले लगाये।
पावन प्यार भरी दृष्टि से दिये अमर वरदान—
स्मृतियों के गहरे तल में सुख......
भर करके तूफ़ान हृदय में पास तेरे जब आते,
तेरी लहरों में लहराकर मन हल्के हो जाते।
फिर तुमसे ही शक्ति भरके बादल बनके जाते
ज्ञान, प्रेम, आनन्द गुणों की वर्षा वे बरसाते।
बना रहे सागर दिल बाबा हमको बाप समान—
स्मृतियों के गहरे तल में सुख......
प्यारा सा 'स्मृति-दिवस' ये तेरी याद दिलाये,
'बनना सम्पूर्ण समर्थ है'—ये संदेश सुनाये।
आज वतन में रूहानी चितवन से हमें बुलाये
उड़ते आयें पंछी बन हम मंगल-मिलन मनायें।
संग आपके मिलकर हम भी करें जगत कल्याण—
स्मृतियों के गहरे तल में सुख का भरा जहान।।

सतीश कुमार, माऊंट आबू

ढेनकनाल सेवाकेन्द्र की ओर से प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन म्यूनिसिपल चेयरमेन जी टेप काटकर कर रहे हैं। साथ में बी.के. बहन-भाई खड़े हैं।

"मैंने बाबा से क्या-क्या सीखा"

—जानकी दादी, मधुबन, आबू

जैसे हीरों को केवल जवाहरी ही परख सकता है, अन्य कोई नहीं, वैसे ही महान आत्माओं की महानताओं की परख कुछ सूक्ष्म दृष्टि वाले ही कर सकते हैं क्योंकि महान आत्माएं अपनी महानताओं का उल्लेख स्वयं नहीं करतीं और परखने के बाद उन महानताओं से अपने जीवन का श्रृंगार करने वाले और भी कम होते हैं। महान तपस्विनी दादी जानकी जी प्रारम्भ से ही 'पिता श्री' की महानताओं की ओर सूक्ष्म दृष्टि रखे हुए थीं। उनकी यह श्रेष्ठ आकांक्षा थी कि वे बाबा का सब कुछ चुरा लें। उनकी यह सच्ची लग्न उन्हें साकार ब्रह्माबाबा का साकार स्वरूप प्रदान कर सकीं। तो यहां प्रस्तुत है उन्हीं के भावों में उनकी वे महान योग्यताएं जो उन्होंने 'पिता श्री' जी से सीखीं और जिनके कारण आज वे विश्व-सेवा के मैदान पर एक अति सफल योद्धा के रूप में उपस्थित हैं और सदा ही अपने मनोबल को ऊंच शिखर पर कायम रखे हुए हैं।

—सम्पादक

मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पिता-पन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अन्त में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगत पिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर।

मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिलीं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसी ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना दे बड़ा करें। भले ही हम जगत पिता तो नहीं हैं, परन्तु हैं तो उनके ही महान बच्चे....

दूसरी मुख्य बात—मैंने बाबा में देखी कि बाबा में तनिक भी कर्त्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सब कुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छुपाये रखना व बच्चों को स्वमान देना—यही महानता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्त्तापन का तनिक भी भान न आये।

हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार (Honest) कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का, चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया, हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई।

मैंने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से ही सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अहंकार न रहे?—यह बाबा में प्रत्यक्ष देखा।

बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसा होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक सम्बन्ध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते—ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थीं। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है।

बाबा ने हमें सिखाया कि हम संसार में कैसे रहें, शिवबाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को कैसे रखें, अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो और नारायणी नशा भी हो।

बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉर्टी में देखा। परिस्थियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया।

बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देता था। सदा यही संकल्प रखता था कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिवबाबा से एनर्जी खींचते रहते थे। मुझे कभी-कभी सोलह-सोलह घन्टे भी कार्यक्रमों में रहना पड़ता है, परन्तु मुझे नहीं लगता कि मेरी एनर्जी नष्ट हो रही है। सदा शक्ति बढ़ने का ही अनुभव रहता है। इस वर्ष जबकि मेरी आयु ७० वर्ष की हो गई है, एक

ही वर्ष में मैं ७० बार हवाई जहाज़ में चढ़ी होंगी, परन्तु इस वर्ष जैसी स्वस्थ मैं कभी नहीं रही। मेरा यही अनुभव रहा कि रात-दिन सेवा में रहने से मेरी शक्ति बढ़ रही है।

इसी तरह जब मैं किसी बड़े प्रोग्राम में होती हूं, तो मुझे कभी हीन भावना नहीं आती। टॉपिक चाहे कैसा भी हो, जब तक दूसरे वक्ता भाषण करते हैं, मैं योग-युक्त होकर साइलेंस की शक्ति इकट्ठी करती रहती हूं। यद्यपि मैं उनकी भाषा नहीं समझती, तो भी मुझे ये ख्याल नहीं आते कि इन्होंने क्या बोला या मैं अच्छा बोलूं, पता नहीं इन्हें अच्छा लगेगा या नहीं? मुझे इस तरह की कोई भी उलझन नहीं होती। मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति में रहती हूं और सब कुछ श्रेष्ठ होता है।

सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, अध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की प्यासी हैं, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें।

सेवा में मैं निमित बने हुओं का अधिक ध्यान रखती हूं, यही बाबा से सीखा है। मैं ही करूं—यह संकल्प कम रहता है। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। जो हुआ वो भी याद नहीं, जो होगा उसकी भी चिन्ता नहीं। सेवा के लिए मन में उलझन नहीं, उमंग अवश्य है। संशय भी नहीं रहता कि सफलता होगी या नहीं।

मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निष्फल नहीं जाता। सार में मैं कहूं—न कोई इच्छा है, न मैं भारी हूं। प्रोग्राम बनें, यह इच्छा नहीं, और बनें तो कोई भारीपन नहीं। हम कर ही नहीं रहे हैं, वही कर रहा है, अतः महिमा उसी की करो।

अन्त में मैं कहूंगी कि भगवान के दर पर कोई भी अभिमान नहीं रख सकता, बाबा ने अपनी निर्माणता से हमें यही सिखाया। यहां पर तो बाप समान निमित्त व निर्माण व्यक्ति ही ज़िन्दा रह सकता है अर्थात् सफल होता है। तो स्मृति दिवस ज्यों-ज्यों समीप आता है, बाबा का सम्पूर्ण चित्र सामने स्पष्ट हो जाता है, उनका प्यार श्रेष्ठ प्रेरणाएं देता रहता है। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।

पृष्ट २३ का शेष

और चेन्ज किया वह ही कुछ कर पाये और कर रहे हैं।

हमारे जीवन में ये एक सृष्टि ड्रामा का सबसे बड़ा आश्चर्य ही है कि एक ही आत्मा इस धरती पर रहकर न्यारे-प्यारे-पन की, बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण कर कर्मातीत बनी। उन्होंने यहाँ भी लम्बे समय उपराम स्थिति का अनुभव किया। क्या ये इस सृष्टि नाटक का, इस विधान का अदभुत रहस्य नहीं है? शिवबाबा की नम्बर वन मदद के पात्र रहे, अन्त तक जिनका पढ़ाई पर सम्पूर्ण अटेन्शन रहा, कर्मों की गति का स्पष्ट ज्ञान होते भी कर्मों की गुहयता में रहे, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग्य वृत्ति पर स्टूडेंट (Student, विद्यार्थी) की रीति फुल अटेन्शन दिया—कभी भी किसी ने भविष्य निश्चित होते भी बाबा को अलबेला नहीं देखा। सदा हिम्मत की विधि से सबको हिम्मत दे आगे बढ़ाया।

बाबा का उदाहरण। हमारे जीवन में ऐसा उदाहरण है कि हम अर्न्तमुखी होकर यदि बाबा की एक-एक विशेषता पर दृष्टि डालें और देखें कि बाबा ने कमाल कर दिया...असम्भव सम्भव हो गया...निश्चय और ईश्वरीय नशा बाबा के जीवन को ईश्वरीय विश्वविद्यालय का गौरव बना गया...वही बाबा बेहद की सेवा पर आज भी उपस्थित हो **दिव्य कर्त्तव्य कर रहे है।**

सर्व के सहयोग से सुखमय संसार

समय की पहचान मिल सके, बस इसका आधार चाहिये
जन-जन की ये ज्योति जल सके, ऐसा घृत भंडार चाहिये
दान नहीं वरदान हमें दो, घृणा नहीं स्नेह हमें दो
ले जाओ धनधान्य हमें तो, थोड़ा सा सहयोग चाहिये
सुखमय ये संसार बन सके, बस उसका आधार चाहिये
मानवता जब सिरधुनाती हो, नैतिकता छिप कर रोती हो
नीति धर्म का रूप बन सके, ऐसा नैसार्गिक उपहार चाहिये
जन-जन की ये ज्योति जल सके...
विकल हो गये अंग हमारे, लगते सब तनाव के मारे
लेकर जो पैगाम चल सके, ऐसा शान्ति दूत चाहिये
सबका ये सहयोग मिल सके, राजयोग आधार बन सके
बस उसका आधार चाहिये
नहीं विभाजन हो घर-घर में, भाई-भाई का प्यार बढ़ सके
सदियों से जो चले आ रहें, नहीं मिट सके न्यायालय में
सारे वाद विवाद मिट सके, रूहों में वो प्यार चाहिये
जन-जन...
हे चेतन्य जगत के बन्दे, सब वर्गों के तोड़ के फन्दे
लेकर हाथ में हाथ चल सके, गली ग्राम गुलजार कर सके
ऐसे सहयोगी दो ये हाथ चाहियें, सुखमय ये संसार बनें सके
राजयोग आधार चाहिए

मनोरमा "मनु"

कामान्धता

ले. ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

प्रजापिता ब्रह्मा के साकार जीवन-काल में बहुत थोड़े ही लोग उन्हें ठीक रीति से पहचान सके। समयान्तर में उनमें दिव्य गुणों का विकास इतना होता गया था कि कई वत्स तो उनके दिव्य गुणों को देखकर सदा यही समझते थे कि ब्रह्मा बाबा द्वारा शिव बाबा ही कार्य कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, वे यह मानते थे कि ब्रह्मा बाबा तो साधारण हैं, अतः यह अति दिव्य कार्य उनके न होकर शिव बाबा के ही हैं। यद्यपि वे किसी हद तक ठीक भी होते थे तथापि सभी दिव्य कार्य शिव बाबा ही के मानने का परोक्ष अर्थ तो यही निकलता था कि ब्रह्मा बाबा केवल साधारण ही कार्य करते हैं। स्पष्ट है कि इस अंश में उन्होंने भी ब्रह्मा बाबा को ठीक रीति से नहीं पहचाना। जो लोग वैसे ही ब्रह्मा बाबा के साधारण मानवीय रूप को देखते रहे और यह नहीं पहचान सके कि शिव बाबा उनके माध्यम से कार्य करते हैं, वे भी उन्हें सही रूप से नहीं पहचान सके।

ख़ैर, वत्सों में से तो कुछ उन्हें थोड़ा, कुछ अधिक पहचान सके परन्तु सामान्यतः संसार के लोग न तो यह समझ सके कि शिव बाबा इनके माध्यम से कार्य करते हैं। और न वे यह जान और पहचान सके कि ये ब्रह्मा बाबा हैं और संसार के परमोत्कृष्ट राजयोगी हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत लोग तो उनकी शिक्षाओं का इसलिए लाभ नहीं ले सके कि वे उन्हें साधारण मानते रहे और अन्य कुछ लोग उनकी बातों का महत्त्व न जानने के कारण उनका विरोध भी करते रहे हालांकि वे बातें परम सत्य और कल्याणकारी होती थीं।

उनकी एक शिक्षा को लेकर हमें एक छोटी-सी कहानी याद हो आती है। कहानी यह है कि एक पति-पत्नि शिव के भक्त थे। उनकी कोई सन्तान नहीं थी। भक्ति का रस लेते रहते थे, जीवन अच्छी तरह गुज़र रहा था। धन-मान की भी कोई कमी नहीं थी न ही कोई शारीरिक व्याधि थी। आपस में भी उनमें कोई अनबन नहीं थी न रिश्तेदारों के साथ मन-मटाव। ज्यादा बखेड़े न होने के कारण उनका ध्यान भी बंटा हुआ नहीं था और उन्हें भक्ति के निमित्त समय भी मिल जाता था। परन्तु रह-रहकर उनके मन को यह संकल्प दुख देता था कि उनकी कोई सन्तान नहीं थी। लगभग उनकी आयु ५० वर्ष हो गई थी और इन्हें लगा कि अब यह जीवन तो ऐसा ही गुजरेगा।

अपनी इस मानसिक पीड़ा को दूर करने के लिए अब उन्होंने भक्ति में यह कहना शुरू कर दिया कि—"प्रभु जी, हमें एक पुत्र दे दो, अब बुढ़ापा आ चला है, एक पुत्र होगा तो हमारे बुढ़ापे में कोई तो सेवा करेगा। प्रभु जी, हमने इतनी भक्ति की, उसका यह फल तो दे दो कि जिससे एक पुत्र-रत्न हमको मिल जाए..."

लगभग ५५ वर्ष की आयु में उनका एक पुत्र पैदा हुआ। पांच वर्ष तक तो वह यही सोचते रहे थे कि इतनी भक्ति करने के बाद भी भगवान सुनते नहीं हैं बल्कि पहले जो वे भगवान से प्रसन्न थे, भक्ति करने से उनके मन को जो सुख-लाभ होता था, अब वे भगवान से भी खिन्न थे, रूठे हुए होने के कारण वे भगवान को भी उलाहना ही देते थे। पहले तो वे यह कहा करते कि भगवान भला करता है परन्तु ५० से ५५ वर्ष की आयु के दौरान वे यह भी कहने लगे थे कि भगवान ने हमारा तो भला क्रिया नहीं अथवा हमारी तो सुनी नहीं।

अब ५५ वर्ष की आयु में जो पुत्र पैदा हुआ, वह जन्मान्ध था। अब वे कभी भगवान से नाराज़ होते, कभी कर्मों को कोसते, कभी अपने भाग्य का रोना रोते और कभी भक्ति को व्यर्थ मानते। ख़ैर, अब हो भी क्या सकता था। बच्चे के थोड़ा बड़ा होने के बाद एक गुरुकुल में बच्चे को दाखिल किया और ५-७ वर्ष के बाद १३-१४ वर्ष की आयु में वह बच्चा पढ़कर घर वापस लौटा।

बच्चा जब गुरुकुल में था, तब भी कभी-कभी बच्चे का अन्धापन याद आने पर उनका मन अशान्त हो जाता था और अब जब बच्चा घर में आ गया तब तो उस बच्चे को देखकर उन्हें लगता कि अब तो बुढ़ापे में हमें ही इसकी सेवा करनी पड़ेगी। वे बच्चे के दुःख को देखकर भी दुःखी रहते। जब बच्चा नहीं था, तब बच्चे की इच्छा से वे दुःखी होते थे और जब बच्चा हो गया तो बच्चे को देखकर दुःखी होते। परन्तु हां, पहले भक्ति में कुछ मन लग जाता था, समय भी मिल जाता था, भगवान के प्रति प्रेम भी बना हुआ था परन्तु अब तो ये सब भी जाते रहे थे।

इसके बाद एक दिन ऐसा हुआ कि बच्चा चुप बैठा कुछ सोच रहा था और सोचते-सोचते उसने अपने माता-पिता से एक प्रश्न पूछ लिया। बच्चा बोला—"पिताजी, मैं जन्मान्ध क्यों हूं?"

पिता ने उत्तर दिया—"यह अपने किन्ही पूर्व जन्म के कर्मों का फल होता है।"

बच्चा एक मिनट तो चुप रहा परन्तु फिर बोला—"मैंने तो सुना है कि पुत्र को माता-पिता की बीमारी भी उनसे विरासत में मिलती है।"

पिता बोला-"परन्तु बेटा, मैं तो अन्धा नहीं हूं न तेरी मां अन्धी है।"

बच्चा फिर कुछ देर चुप रहा और फिर बोला—"पिताजी, अगर स्पष्टवादिता के लिए क्षमा करें तो मैं यह कहूंगा कि अन्धापन तो कई तरह का होता है और एक तरह तो आप भी अन्धे ही हैं।"

पिता को उसका यह वचन बुरा लगा। परन्तु फिर भी सहन करते हुए उसने कहा कि "हम तो अन्धे नहीं हैं, तुम कैसे कहते हो कि हम अन्धे हैं?"

पुत्र बोला—"पिताजी, क्षमा कीजिएगा, मैंने छोटे होकर भी बहुत कठोर वचन कह दिया परन्तु जब आपने कहा कि मेरा अन्धापन मेरे किसी पूर्व कर्म के कारण है तो मेरे मन में यह विचार आया कि आपके अन्धे पुत्र का मिलना भी तो किसी कर्म का परिणाम होगा कि जिससे सेवा लेने की बजाय आपको करनी पड़ रही है। और देखकर अथवा ठीक बुद्धि से तो कोई भी बुरा काम नहीं करता। यह सोचकर मैंने यह कटु पर सत्य वचन कह दिया कि अन्धे तो आप भी हैं। पिताजी, मैं एक बार फिर क्षमा मांगता हूं। आपने इतनी भक्ति की और २५-३० वर्ष की भक्ति अथवा तपस्या भंग करके प्रभु से और कुछ मांगने के बजाय पुत्र मांग लिया, इससे तो मुक्ति-जीवन्मुक्ति मांग ली होती; तब ये दुःख तो न देखना पड़ता।

यह सुनते ही उसके माता-पिता का मन उपराम हो गया। उन्हें लगा कि भले ही हमारे पुत्र ने बात कटु शब्दों में कही है परन्तु वास्तव में हमारा कल्याण तो इसी में ही था। ऐसी सन्तति का क्या लाभ जिससे माता-पिता के मन को भी कष्ट हो और सन्तति भी कष्ट भोगे। और फिर विशेष बात यह कि मनुष्य भक्ति से भी वंचित हो और तपस्या भी न कर सके, न ही अपने भविष्य को उज्जवल बना सके। पुत्र की बात उन्हें जंच गई और उन्हें मन में वैराग्य आ गया।

ऐसे ही ब्रह्मा बाबा के मुखारविन्द से जब ये शब्द निकलते कि काम विकार मनुष्य को अन्धा कर देता है और कि कामी को अपना भला-बुरा दिखाई नहीं देता, वह अपने पांव पर स्वयं ही कुल्हाड़ा मार देता है तो लोग उनकी बात को सुनकर चमक उठते। उन्हें लगता कि ये कटु वचन कह रहे हैं। प्रायः लोग यह नहीं समझते थे कि इससे तपस्या की बात तो दूर रही मनुष्य भक्ति रस से भी वंचित हो जाता है।

बाबा का कहना तो यह था कि "मनुष्य काम के वशीभूत होकर जो सन्तान उत्पन्न करता है, वह स्वयं भी अज्ञानान्ध होती है और माता-पिता के लिए भी दुःखदायक बन जाती है। इसकी बजाय जो सतयुग में योगबल से सृष्टि होती है, वही सन्तति सुख पाती और सुख देती है। अतः काम विकार को छोड़कर मनुष्य को पहले योगयुक्त होना चाहिए जिससे उसे मुक्ति-जीवन्मुक्ति भी प्राप्त हो और बाद में दैवी सन्तति के सुख का भी लाभ हो।" कई लोग तो इन महावाक्यों को समझ गये और उन्होंने अपना जीवन बना लिया परन्तु बहुत से लोग साधारण तन को देख उनके तन में आये शिव बाबा को न पहचानने के कारण इस लाभ से वंचित रहे। वे भक्ति रस भी खो बैठे, मुक्ति-जीवन्मुक्ति से भी वंचित हो गए और दुःख वृद्धि के निमित्त बने।

गीत

ले.-बी.के. मोहन, माऊंट आबू

बाबा आपने जो रचाया,
अनोखा एक संसार है।
दैवी कुल यह जग से न्यारा,
सबमें रूहानी प्यार है।

बच्चों के नयनों में भर दी, दिव्यता निराली,
भर दी निर्मल वाणी में, सुखदाई खुशहाली,
नूरानी चेहरों में भरा, नूर का भण्डार है।

मोती झड़ते ज्ञान के, जब-जब मुख यह खोले,
हो जाता कल्याण जगत का, दिव्य वचन जब बोले,
धरती को करते यह पावन, बहाये अमृत धार है।

शक्तियों की मूर्त से होता, दर्शन बाबा का प्यारा,
एक-एक पाण्डव को बाबा, गुणों से खूब श्रृंगारा,
हर मूर्त में दिखते बाबा, जैसे आप साकार हैं।

"बाबा ने मुझे उड़ता पन्छी कैसे बनाया"

ब्र.कु. जयन्ति, लंदन

इस सृष्टि पर भगवान के अनेक दिव्य चरित्रों को देखने वाली और अनेक वरदानों से सजी हुई जयन्ति बहन अपनी प्रभावशाली वाणी से जिज्ञासुओं के मन पर अमिट छाप छोड़ती हैं। उनका योगी व्यक्तित्व तथा सरल स्वभाव सहज ही मनुष्यों के मन को खींच लेता है। आपने अपने योगी जीवन के अनुभवों से हज़ारों मनुष्यात्माओं का जीवन श्रेष्ठ बनाया। वर्तमान समय आप ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के विदेश के मुख्य सेवाकेन्द्र (लंदन) में निवास करते हुए विभिन्न स्थानों पर जाकर अनेक आत्माओं में नया उमंग उत्साह भर के आगे बढ़ाने की अथक सेवा में कार्यरत हैं। इस प्रकार ईश्वरीय सेवा तथा तपस्या में रत जयन्ति बहन के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं।

सम्पादक

मेरा जन्म सन् १९४९ में पूना (महाराष्ट्र) में एक सम्पन्न धार्मिक परिवार में हुआ। घर में माता पिता तथा दादी को भक्ति पूजा का शौक था। कभी-कभी मैं भी उनके साथ मन्दिर में जाया करती थी। लेकिन अन्दर से मेरी इतनी रुचि नहीं थी। माता पिता के लौकिक व्यापार के कारण हम सभी का लंदन जाना हुआ। लेकिन मैं छुट्टियां मनाने के लिए पूना में आती थी।

वैसे तो हमारे परिवार का दादी जानकीजी के साथ अच्छा परिचय था ही। मेरी लौकिक मां और दादी प्रतिदिन सेवाकेंद्र पर मुरली सुनने के लिए जाती थीं। एक दिन अचानक मुझे वहां जाने की प्रेरणा आई तो दादी जानकीजी ने ही मुझे साप्ताहिक कोर्स कराया। ६ सप्ताह के बाद मुझे ऐसा लगा कि मैं इस ज्ञान को अपने जीवन में कैसे धारण करूं। उसके बाद हर वर्ष हम बाबा से मिलने आबू जाते थे। १९५६ में एक दिन मुरली चलाते समय मुझे देखकर बाबा ने कहा था कि ये बच्ची ईश्वरीय सेवा करेगी, ये तो बहुत अच्छी टीचर बनेगी। फिर तो हम लंदन चले गए।

बाबा की अनोखी पालना

बाबा सन् १९५७ से लेकर लंदन में रजनी बहन (लौकिक मां) को खुद अपने हाथों से मुरलियां भेजते थे। अपने हस्ताक्षर से पत्र लिखते थे। फिर बाबा ने टेप से सन्देश भेजना भी चालू किया। जो भी छपाई होती थी, बाबा ज़रूर हमारे पास भेजते थे। जब त्रिमूर्ति, सृष्टि चक्र और कल्प वृक्ष के चित्र तैयार हुए तो बाबा ने चित्रों का सेट गोल्डन बासकेट में भेजा और कहा कि ये लंदन की रानी को सौगात देना और इन चित्रों से विश्व-सेवा करना। लेकिन उस समय विश्व-सेवा की रूपरेखा तो नजर ही नहीं आती थी। फिर भी बाबा ने ३० वर्ष पहले जो बातें कही थीं, उनका साकार स्वरूप आज हम सभी देख ही रहे हैं।

बाबा के प्यार ने मेरा दिल जीत लिया

उन दिनों में मुझे लंदन बहुत दूर लगता था। १९५९ के मई मास में भारत में आम की सीजन चल रही थी। तब लंदन में आम की कमी थी। तो बाबा ने ४ आम का पैकेट एअर-मेल से हमारे घर भेजा था। तो उस पैकेट को देखकर मैं और मेरा ६ वर्ष का छोटा भाई एकदम आश्चर्य चकित हुए। हमें लगा कि बाबा हमें कितना याद करते और प्यार भी देते हैं। जो प्यार हमें लौकिक सम्बन्धियों से नहीं मिलता था, वह बाबा ने हमें दिया।

सचमुच उस अनोखे प्यार ने मेरा तो दिल ही जीत लिया था।

बाबा से मिलकर मुझे अपनापन महसूस होता था। बाबा की दृष्टि X-ray Vision जैसी अनुभव होती थी। ऐसा लगता था कि बाबा सब कुछ जानते हैं। बाबा जैसे कि मन की बातें पढ़ लेते थे। उस समय बाबा ये नहीं देखते थे कि इन बच्चों में इतना ज्ञान तो नहीं है, फिर भी शुभचिन्तक बनकर हमें सुन्दर राज़युक्त बातें सुनाते थे। और हर प्रकार से स्थूल तथा सूक्ष्म खातरी करते थे। फिर तो हम लंदन चले गए और मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गई।

बाबा ने मुझे मीटिंग में बिठाया

जब मैं १९६७ में भारत में छुट्टियां मनाने आई थी तो मां के साथ बाबा से मिलने मधुबन गई थी। उन दिनों में ईश्वरीय सेवार्थ प्लान बनाने के लिए महारथी भाई-बहनों की मीटिंग चल रही थी। तो बाबा ने हम दोनों को मीटिंग में बैठने के लिए छुट्टी दी। वैसे तो मीटिंग में मुझे कुछ रुचि नहीं थी। मीटिंग चालू होने से २ घंटे बाद बाबा मीटिंग में जा रहे थे। तो मुझे भी बाबा के साथ मीटिंग में जाने की दिल हुई, तो मैं भी बाबा के साथ चली गई। बाबा की महारथी भाई-बहनों के साथ चली हुई चर्चा सुनी। फिर उन्होंने बाबा से कुछ प्रश्न पूछे। बाबा सभी की बातें सुनकर गंभीरता से और अथारिटी से उत्तर देते थे।

मीटिंग में सभी माला के रूप में, एक तरफ भाई और दूसरी तरफ बहनें, बीच में बाबा बैठे थे। मुझे यह सीन कई बार याद आती रहती है। मुझे उस समय संकल्प चला था कि बाबा ने मुझे मीटिंग में बैठने की छुट्टी क्यों दी। तो वह भविष्य के लिए बाबा ने मुझे पहले ही अनुभव कराया।

मैंने अपने जीवन का फैसला किया

जून १९६८ में हम मधुबन में बाबा से मिलने गये थे। बाबा बच्चों से रात्रि को ९.३० से १०.३० बजे के बीच में मिलते थे। तो उस समय झोंपड़ी में बैठे हुए बाबा से मैंने अपने जीवन के फैसले की बात की। हमारी लौकिक मां को सदा फिक्र रहती थी कि इसको तो भारत में रहने का बिल्कुल ही अनुभव नहीं और उन दिनों में आश्रम की जीवन भी बहुत साधारण थी, तो यह कैसे चल सकेगी? तो उसकी बातें सुनकर बाबा ने मुझे पूछा कि बच्ची क्या चाहती हो? तो थोड़े ही शब्दों में मैंने कहा कि बाबा मैं तो ईश्वरीय सेवा में ही अपना जीवन सफल करना चाहती हूँ। तो बाबा ने तुरन्त कहा कि बच्ची तो विजयी बनेंगी। वह घड़ी तो मेरे जीवन में महत्वशाली घड़ी थी।

बाबा ने मुझे नजर से निहाल किया

उन्हीं दिनों में हम रात्रि के समय मुरली के बाद बाबा से गुड़-नाईट करने जाते थे। बाबा अपनी खटिया पर लेटे हुए थे। हम १०-१२ भाई-बहनें दादी जानकीजी सहित बाबा के सामने जाकर खड़े हुए। बाबा के तकिया के बाजू में मोतिया के फूल थे, उसकी बड़ी मीठी खुशबू आ रही थी। तो बाबा ने सभी को दृष्टि दी और मुझे सामने बुलाया। मोतिया के फूल हाथ में देकर बाबा ने मुझे दृष्टि दी। उस दृष्टि से मुझे अनुभव हो रहा था कि बाबा चुम्बक के समान आत्मा को खींचकर बिल्कुल पार ले जा रहे थे जैसे कि एक प्रकाश की दुनिया का अनुभव हो रहा था जिसमें मैं और बाप दोनों ही हैं। कितने समय तक यह सीन चली मुझे भान ही न था। फिर जैसे ही बाबा अपनी पावर को हल्का करके अपनी दृष्टि औरों के तरफ घुमा करके कहने लगे कि आपको ख्याल तो नहीं हुआ कि बाबा विशेष दृष्टि क्यों दे रहे हैं। दादी शील सामने ही खड़ी थी, उन्होंने कहा कि नहीं बाबा हमें तो खुशी होती है। दादी जानकीजी ने भी मुस्कराते हुए कहा कि बाबा हम समझते हैं। तो उस समय मुझे इस साकारी दुनिया का होश आया। इस अनुभव से तो जैसे मेरा मरजीवा जन्म ही हुआ।

बाबा हमारे साथ खेल खेलते थे

ब्रह्मा बाबा बुजुर्ग (९१ वर्ष) के थे, फिर भी हम बच्चों को खुश करने के लिए चुस्ती से बेडमिंटन का खेल खेलते थे। खेलते समय बाबा लाईट और माईट हाउस अनुभव होते थे। बाबा ने मुझ से पूछा कि बच्ची जानती हो किसके साथ खेल रही हो, शिवबाबा के साथ खेल रही हो न? तो न सिर्फ बाबा ने शब्दों से हमें बताया लेकिन प्रैक्टिकल हमें अनुभव कराया। ऐसे ही एक बार मैं बाबा के साथ भोजन कर रही थी, बाबा ने मुझे बहुत देर तक दृष्टि दी। तो वाईब्रेशन्स से ऐसा लगता था कि हम किसी साधारण व्यक्ति के साथ नहीं लेकिन पावरफुल अथारिटी के साथ हैं।

बाबा के जीवन में सन्तुलन देखा

बाबा की पावरफुल परसनैलिटी होते हुए भी, नम्रभाव

और प्रेमसम्पन्न व्यवहार देखा। वैसे तो संसार में हम देखते हैं कि किसी की अगर परसनैलिटि अच्छी होती है तो साथ में रोब जरूर होता है। परन्तु बाबा के जीवन में यह अनोखा सन्तुलन था, इसलिए विश्वपिता होते हुए भी यज्ञ की हर छोटी-२ बात का ध्यान रखते थे। हरेक बच्चे के लिए हर प्रकार की सुख-सुविधा हो, ऐसा प्रैक्टिकल माता का पार्ट बजाते हुए भी हमने बाबा को देखा।

बाबा ने मुझे सेवा पर भेजा

अक्तूबर १९६८ में बाबा ने मुझे दीदीजी के साथ दिल्ली ईश्वरीय सेवार्थ भेजा। कुछ समय के बाद दीदीजी मुझे आगरा ले गई। वहां रहते हुए ग्वालियर और झांसी में भी सेवार्थ जाते रहे। उसके बाद जब मैं दिसम्बर १९६८ में ग्रुप के साथ बाबा से मिलने मधुबन गई तो बाबा बहुत ही खुश थे। बाबा ने कहा कि बच्ची बाबा की उम्मीदें पूर्ण करने में सफल हो रही है।

अव्यक्त बापदादा ने मुझे विदेश सेवा पर भेजा

अव्यक्त बापदादा ने जून १९६९ में मुझे कहा कि बच्ची, बाबा तुम्हें लौकिक घर (लंदन) में नहीं भेज रहे हैं लेकिन विशेष सेवार्थ भेज रहे हैं। तुम भले अपने घर में रही लेकिन मधुबन जैसी दिनचर्या बनाना जिससे आपकी सेफ्टी भी रहेगी और बाबा तुम्हें शक्ति भी देते रहेंगे। बाबा ने मुझे विशेष कहा था कि अमृतवेले भगवान का द्वार वरदान पाने के लिए सदा खुला रहता है, जितना खजाना लेना चाहो ले सकती हो। तो लंदन में इतनी सर्दी होते हुए भी मैं और रजनी बहन प्रति दिन प्रात: योग और मुरली क्लास करते थे जिससे हमारा उमंग-उल्लास सदा बढ़ता ही रहा।

बाद में १९७१ में वहां भारत से कुछ भाई बहनें सेवार्थ आये थे जिससे धीरे-२ सेवा बढ़ती गई। फिर १९७४ में दादी जानकीजी का सेवार्थ आना हुआ। दादी जी के आने के बाद तो सेवा वृद्धि को पाती रही और अभी तो बहुत तेजी से बाबा की सेवा आगे बढ़ती जा रही है।

बाबा विदेश में फरिश्ता रूप से सेवा कर रहे हैं

ब्रह्मा बाबा अव्यक्त होने के बाद जैसे कि फरिश्ता रूप से विशेष विदेश सेवा कर रहे हैं यह अनुभव कई बार हमें हुआ। साकार बाप तो भारत में रहे लेकिन अव्यक्त बाप तो विश्व की सेवा कर रहे हैं। विदेशी बच्चों को जगाकर पालना भी कर रहे हैं। इससे उनको ऐसा लगता है कि बाप हमारा ही बाप है जो हमें प्यार करते और शक्ति भी देते हैं। कई विदेशियों को विशेष प्रेरणाएं तथा दिव्य अनुभव प्राप्त होते हैं।

बापदादा ने मुझे बहुत मदद की

कई बार बाबा सेवा के प्रति इशारे देते रहे। यह ईश्वरीय ज्ञान विश्व के विभिन्न वर्गों की आत्माओं के सामने कैसे रखे यह मुझे बाबा ने सिखाया।

एक बार करेबीयन (CARIBBEAN) के बहामास (BAHAMAS) में एक गुरु के आश्रम में बहुत बड़ी कान्फरेन्स थी, जिसमें हमें निमंत्रण मिला था। भाषण का विषय था "दो हजार सन् के बाद संसार का भविष्य"। तो मैं उस समय लंदन में ही थी। तो मैंने इसका जवाब पूछने के लिए मधुबन में पत्र लिखा। तो बापदादा ने बहुत सुन्दर शब्दों में उसका जवाब दिया था कि बच्ची, विनाश के बारे में तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं। संसार की स्थिति ऐसी है जो लोग देखकर ही समझ जाते हैं। विनाश की बात सुनकर तो उनके मन में भय पैदा होगा। इसलिए यह बात न कह करके उन्हें बताओ कि भविष्य में बहुत सुन्दर स्वर्णिम संसार की दुनिया आ रही है, उसके लिए हमें किस प्रकार की तैयार करनी चाहिए, तो ये सुनकर वो खुश हो जायेंगे।

मुझे सेवा करते समय साकार बाबा की बताई हुई बात सदा याद आती है कि मुरली चलाते समय बाबा के सामने एक देश के एक धर्म के लोग होते हुए भी ऐसी बातें सुनाईं जो सर्वधर्म और सर्वदेश की आत्माओं के काम की बातें थीं। उससे स्पष्ट होता था कि बीजरूप, ज्ञान सागर बाप बोल रहे हैं। बाबा ने १९६७ में मुझे कहा था कि—बच्ची विदेश में जाकर बाबा का ज्ञान सुनाएगी, उन्होंको बताएगी कि विश्व की हिस्ट्री, जागरफ़ी क्या है और जैसे ही वो लोग सुनेंगे तो पूछेंगे कि ये ज्ञान तुमको सिखाने वाला कौन है? और बच्ची कहेगी कि ये ज्ञान बाप भारत देश में आबू पर्वत पर मधुबन में सुना रहा है। तो १९७० से लेकर विदेश में जब भी भाषण करने का मौका मिला तो कई बार इस प्रकार की सीन प्रैक्टिकल में देखी। जब मैं उनको ज्ञान की बातें सुनाती थी, तो वहां का रिवाज है भाषण के बाद प्रश्न पूछना, तो सभा में से अवश्य कोई न कोई यही प्रश्न पूछता था कि ये ज्ञान आपको कहां से मिला?

बाबा की बताई हुई दूसरी बात मुझे सदा याद रहती है कि बाप की प्रत्यक्षता का आवाज़ वहां से ही भारत में पहुंचेगा। तो मुझे यही तात रहती है कि जितनी प्राप्ति हमें बाबा से हुई है वो उन आत्माओं को भी मिले। उनको बाप के ज्ञान प्रकाश से प्रेम और सुख का अनुभव हो। मैं सदा समझती हूं कि हमें दो प्रकार के आत्माओं की सेवा करनी है। एक तो जो भारत की वर्सा लेनेवाली आत्माएं और दूसरी मुक्ति का वर्सा लेनेवाली आत्माओं की अच्छी तरह से सेवा हो।

सन् १९६९ से लेकर दादी जानकीजी मुझे प्रेरणा देती रहीं। विश्व सेवा के लिए जो बाबा ने उम्मीदें रखी हैं उन्हें पूरा करने के लिए दादी से बहुत मदद मिलती रही है। मैं देखती हूं कि दादी कैसे सर्वआत्माओं की शुभचिन्तक है और संस्कारों को मिलाना सिखाते हुए आगे बढ़ाती रहती है। दादी के क्लासेस से आत्मा महसूस करती है कि मनमत छोड़कर श्रीमत को अपनाने में ही कल्याण है। हर आत्मा अपने विवेक से समझ जाती है कि श्रीमत क्या है।

सचमुच बाबा और मधुबन की याद मुझे सदा लाइट रखती है। सेवाक्षेत्र में बहुत बातें आती हैं। फिर भी स्वयं को डबल लाइट रखकर उड़ता पन्छी बन सदा उड़ती रहती हूं। दूसरी बात, मैं अपनी बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर रखती हूं जिससे समय प्रति समय स्व-उन्नति के लिए तथा विश्व-सेवा के लिए बाबा की प्रेरणाओं को कैच कर सकूं।

इस प्रकार बाबा की छत्रछाया में जीवन में सुखद घड़ियां बिताईं। इस अलौकिक जीवन में अनेक अलौकिक अनुभव हुए। अभी सदा यही उमंग रहता है कि जल्दी से जल्दी अपनी सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करके धरती पर आए हुए भगवान को प्रत्यक्ष करें ताकि अंधकार में भटकती हुई करोड़ों आत्माएं अपने प्राण प्यारे बाप से मिलन मना सकें।

फरिश्ते का इशारा- 'फरिश्ता भव'

बी.के. जगरूप, कृष्णा नगर, देहली

सन् 1971 दिसम्बर में जब भारत और पाकिस्तान में एक दूसरे पर आक्रमण के कारण भीषण युद्ध चल रहा था तब मैं भी उस युद्ध में वायरलैस ऑपरेटर (Wireless-operator) की ड्यूटी पर था। 12 दिसम्बर रात्रि करीब 2.30 बजे की बात है, मैं अपनी वायरलैस पर कानों पर हैडफोन लगाए युद्ध का पूरा हाल सन्देश के रूप में सुन रहा था। युद्ध में मिलिट्री जमीन के अन्दर (Under Ground) रहती है, अतः मैं भी जमीन के अन्दर जहां एक छोटा-सा कमरा खोदा हुआ था, उसी में था,मेरे पास एक मोमबत्ती जल रही थी और अपने बाएं तरफ मैंने एक सलोगन लिखकर दीवार पर लगाया था। सलोगन था—''मीठे बच्चे! सदा फरिश्ता समान प्रकाशवान रहो तो आप सदा सेफ (Safe) रहेंगे।'' यह सलोगन मुझे बहुत आकर्षित करता था। अचानक वायरलैस में आवाज़ आने लगी—'आप दुश्मन के घेराव में आ चुके हैं और खतरे में हैं।' यह सन्देश सुनकर तो आप भी सोच सकते हैं कि मीठे बापदादा की याद कितनी बढ़ गई होगी! खैर, मुझे शरीर छोड़ने का डर नहीं था। परन्तु भगवान से मैंने अन्दर ही अन्दर यह जरूर उल्हाना देना शुरू किया कि बाबा, आपने सतयुगी दुनिया का सन्देश तो दिया है परन्तु सतयुगी प्रालब्ध बनाने का समय भी आपको देना है। ऐसे तेज गति से सकंल्प करते-करते मैंने क्या देखा कि मेरे पीछे से एक लाईट आ रही है जो धीरे-धीरे, बढ़ती-बढ़ती इतनी ज्यादा हो गई कि मेरा छोटा कमरा और बायरलैस बहुत चमकने लगे परन्तु लाईट की चमक में एक बहुत अलौकिक आनन्द जो मुझे अशरीरीपन का आभास करवा रहा था। मैंने सोचा—अन्धेरी रात और ठंडी हवा का तूफान और ऐसे भयानक समय पर यह चमक और अलौकिक आनन्द कैसे? जब मैंने उस लाईट की तरफ अपनी गर्दन घुमा करके देखा, जो मेरे सिर के ऊपर से आ रही थी, कि मेरे पीछे एक फरिश्ता लाईटहाऊस(Light-House) की तरह खड़ा था। वह फरिश्ता पीछे को हाथ करके अपनी पवित्रता की लाईट मेरे ऊपर फैंक रहा था। मेरा ध्यान उस फरिश्ते के मस्तक पर गया तो देखा फरिश्ते के मस्तक पर एक बहुत सुन्दर सूर्य चमक रहा था। फरिश्ते से आवाज आई—''बच्चे, मैं आपके पीछे हूं।'' इन शब्दों के साथ वह अदृश्य हो गया। मुझे इन शब्दों ने एकदम निश्चिन्त कर दिया कि विश्व का अनादि और आदि पिता, दोनों मेरे पीछे हैं, मैं पूर्ण बचाव में रहूंगा। सो ऐसा ही हुआ।

आज उस दृश्य को याद करके बापदादा के गुप्त ईशारों की फिर याद आ रही है कि ''बच्चे। बाप समान फरिश्ता भव बाप समान फरिश्ता भव...।''

स्मृति-दिवस कर्मातीत बनने का प्रेरक

बी.के. सूरज कुमार, माउण्ट आबू

कलि के इस विकराल काल में भी अनेक महान् विभूतियों ने समय-समय पर वसुन्धरा के आँचल को सुशोभित किया, परन्तु उनके चले जाने के बाद पुनः धरती माँ की कोख सूनी हो गई। कुछ ही महान् पुरुष ऐसे हुए जो इस जननी को अपना महान् उत्तराधिकारी दे सके। उनमें सर्व महान् हुए, नवयुग के सृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा, जिन्होंने जगती को सहारा भी दिया और धीरज भी बँधाया और अनेक महान् वत्स इसके आँगन को प्रफुल्लित करने वाले प्रदान किये जो कि साकार में मानो उनके ही स्वरूप हैं। किसी भी महान् व्यक्ति की महानता इस बात से भी आंकी जा सकती है कि वह कितने महान् पुरुषों का निर्माण करता है।

एक मनुष्य को प्रजापिता ब्रह्मा कहना—शायद मनुष्यों के गले न भी उतरता हो, परन्तु जो उन्हें जानते हैं,जिन्होंने उनके ब्रह्मा होने के कारणों पर ध्यान दिया हो वे इस सत्य से आँखें नहीं मूँद सकते। वे अनुभव कर सकते हैं कि कैसे पिताश्री भाग्य-विधाता प्रजापिता ब्रह्मा ही थे जिन्होंने इस सृष्टि पर वे आदर्श निर्माण किये जिन्हें अपनाकर मानव देवता और संसार स्वर्ग बन जाएगा। वे इस धरती पर रहकर एक महान ऋषि बने और सर्व श्रेष्ठ कर्मातीत अवस्था को प्राप्त हुए। उन्हीं के अनुभवों के आधार पर यहां कर्मातीत अवस्था का उल्लेख किया गया है।

जनवरी मास प्रत्येक ब्रह्मा-वत्स के लिए अन्तर्मुखी व एकान्तवासी बनने का समय होता है। यह कुछ प्रेरणाएँ लेकर आता है और वरदान देकर चला जाता है। जो योगी इस समय का पूर्ण लाभ उठाते हैं वे स्मृति-स्वरूप होकर कर्मातीत स्थिति की ओर बढ़ जाते हैं। कर्मातीत अवस्था एक अत्यन्त निराली, परम-आनन्द युक्त, परमात्मा की समीपता की स्थिति है। तो आओ हम सब पिताश्री के पद चिन्हों पर चलकर कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करें।

कर्मातीत अवस्था क्या है?

राजयोग-अभ्यास का लक्ष्य कर्मातीत होना है। राजयोग कर्मों में कुशलता लाकर, कर्मों को दिव्य बना देता है। कर्मातीत अर्थात् कर्मों से अतीत। पिछले 63 जन्मों में प्रत्येक आत्मा ने विकर्मों का जो विपुल भण्डार बनाया है, उसे योगाग्नि में भस्म करके विकर्म-मुक्त होना कर्मातीत बनना है।

हम देखते हैं कि प्रत्येक कर्म, उसके संकल्प व उसका चिन्तन या बोझ मनुष्य पर प्रभाव डालता है। परन्तु **कर्म करते हुए, कर्मों के प्रभाव से परे हो जाना—इसे कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।**

किसी के पास चाहे अथाह धन, सम्पत्ति व वैभव हों और वह उनका प्रयोग भी करता हो परन्तु पदार्थों का प्रयोग योग-युक्त होकर करना व पदार्थों का उपभोग अनासक्त होकर करना—ये है कर्मातीत स्थिति। ऐसा न हो कि पदार्थ ही हमारा उपभोग करते रहें।

अपने पूर्व जन्मों के व वर्तमान के विकर्मों के कारण मनुष्य अनेक बन्धनों में बन्धा हुआ है। तन, मन व सम्बन्धों के बन्धन उसे चिन्तित करते हैं। परन्तु कर्मातीत अवस्था पूर्ण बन्धनमुक्त अवस्था है। जब मनुष्यात्मा के सम्पूर्ण बन्धन समाप्त हो जाएं, कुछ भी उसे योग-युक्त स्थिति से नीचे न लाए, यही योगी की कर्मातीत अवस्था है।

परन्तु जैसा कि शास्त्रवादी लोग मानते हैं कि इस मुक्त स्थिति में आत्मा पाप व पुण्य कर्म दोनों से मुक्त हो जाती है, ऐसा ईश्वरीय मत नहीं है। इस मुक्त कर्मातीत अवस्था में विकर्मों का सम्पूर्ण अभाव व पुण्य कर्मों की सम्पूर्णता होती है। कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचा हुआ योगी विकर्माजीत बन जाता है अर्थात् उससे कोई सूक्ष्म विकर्म भी नहीं होता और पुण्य कर्म भी वह सम्पूर्ण अनासक्त भाव से करता है। इन्हीं पुण्य कर्मों का बल उसे कर्मातीत से सम्पूर्ण बनाने में मदद करता है।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने ऐसी ही श्रेष्ठ कर्मातीत अवस्था को प्राप्त किया। स्मृति-दिवस हमें भी इसी प्रकार बन्धन-मुक्त बनने की प्रेरण देता है। इस कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचकर मन पूर्णतया विरक्त हो जाता है, उसके सभी आकर्षण समाप्त हो जाते हैं और वह निरन्तर योग की आनन्दकारी स्थिति में स्थित हो जाता है।

कर्मातीत बनने में विघ्न

यों तो सबसे बड़ा विघ्न, ऊँचे लक्ष्य पर दृढ़ न होना व उसे प्राप्त करने में अलबेलापन ही है। परन्तु कई योगी ऐसी अवस्था प्राप्ति की इच्छा रखते हुए भी अपने सामने एक दीवार अनुभव करते हैं। वह दीवार क्या है? जो कभी-कभी तो उन्हें दिखाई भी नहीं पड़ती और यदि दिखाई देती भी है तो उसकी सुन्दरता को देखकर वे उसे तोड़ना नहीं चाहते।

यह विशेष विघ्न या दीवार है—स्वार्थ की।

जीवन में स्वार्थ की कहानी बड़ी लम्बी होती है। पग-पग पर प्रत्येक मनुष्य पहले स्वार्थ का ही ध्यान रखता है, इसे ही ध्यान में रखकर वह कोई काम करता है या निर्णय लेता है।

हम सब या तो लौकिक कार्यों में व्यस्त हैं या अलौकिक कार्यों में। दोनों में ही हमारा स्वार्थ हमें बन्धन में बाँधता है। यदि कोई मनुष्य अपने सूक्ष्म स्वार्थ को महसूस करके इस बन्धन को तोड़ दे तो वह तेजी से कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ सकता है।

हमें कर्मातीत होने के लिए सर्व प्रकार के बन्धनों से मुक्त होना है। तो आओ,हम देख लें कि बन्धन हैं कौन-कौन से, जिनसे हमें मुक्त होना है। और हम यह भी याद रखें कि इन बन्धनों के जाल हमने ही बनाये हैं अतः इनसे मुक्त होना हमारे लिए कठिन कार्य नहीं है।

बन्धन व उनसे मुक्ति

जैसे यदि किसी मनुष्य को रस्सी से बाँध दिया जाए तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह परवश हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा अनेक बन्धनों में बन्धी है। हमें पहले ज्ञान-बल से अपने बन्धन खोलने हैं, फिर योगाग्नि में उन्हें जला देना है।

तो पहला बन्धन है—मन का बन्धन। मनुष्य चाहता है तीव्र पुरुषार्थ करना परन्तु मन उसे करने नहीं देता। व्यर्थ, हीन, निराशात्मक व कमज़ोर विचार बार-बार मन को अपने अधीन कर लेते हैं। ज्ञान-बल से विचारों को महान व शक्तिशाली बनाकर हम इन बन्धनों से मुक्त बनें।

दूसरा बन्धन है—व्यर्थ बोल व व्यर्थ कर्मों का बन्धन...व्यर्थ व विस्तार के बोल बोलकर, मनुष्य निरन्तर अपनी शक्ति को नष्ट करता है। उसे भूल जाता है कि योगी बोल का रस नहीं लेते, वे तो मौन का रस लेते हैं। तो हम चैक करें कि जो बोल हमने बोला या जो कर्म हमने किया, वह फल देने वाला है या निष्फल है। यदि निष्फल है तो उसका त्याग कर दें।

तीसरा बन्धन है—तेरे-मेरे का...इस भावना से ही मनुष्य तनाव व परेशानी के बीज बोता है। इससे मुक्त होने के लिए बेहद की वृत्ति बनाने की आवश्यकता है।

चौथा बन्धन है—स्वभाव, संस्कार का...पुराने स्वभाव संस्कार भी मनुष्य को बरबस बाँध लेते हैं। तो जैसे बाबा सदा ही अपने अनादि आदि संस्कारों का स्वरूप बनकर रहे, हम भी सदा इसी स्वरूप में रहें कि ये पुराने संस्कार मेरे नहीं मेरे तो ये दिव्य संस्कार हैं। चाहते न हों और संस्कार कर्म करा दें—यह है बन्धन और हमारे स्वभाव संस्कार हमें परेशान न करें—यह है बन्धन-मुक्त की निशानी।

पाँचवा बन्धन है—परिस्थितियों व व्यक्तियों के प्रभाव का बन्धन...बड़ा ही जटिल बन्धन है यह। परिस्थिति व व्यक्ति हमारी स्थिति को डगमग न करें—यह है बन्धन-मुक्त की निशानी। स्व-स्थिति व स्वमान से परिस्थितियों पर विजयी बनें व आत्मिक वृत्ति व मेरे-पन के त्याग से मनुष्यों के प्रभाव को समाप्त करें।

छठा बन्धन—प्रकृति का बन्धन...पहली प्रकृति है हमारा शरीर। शरीर की व्याधि हमें बन्धन न लगें, नीचे न लाए, हमें दुखी या परेशान न करे, यह है इस बन्धन से मुक्ति। व्याधि पुरुषार्थ को रफ्तार दे, इसके लिए व्याधि का चिन्तन न हो बल्कि स्वचिन्तन व ईश्वरीय चिन्तन हो। हमारे मुख से यह शब्द न निकलें कि मैं बीमार था, इसलिए पुरुषार्थ न कर सका, बल्कि हम कहें कि हमारी व्याधि हमें कर्मातीत स्थिति के समीप ले आई। जैसे ब्रह्मा बाबा ने दिखाया—व्याधियों के समय वे अधिक मग्न थे, व्याधियों के प्रभाव से परे ईश्वरीय नशे में थे।

सातवाँ बन्धन है—सेवाओं का... सेवा तो बन्धन नहीं है, बन्धन मुक्त होने का साधन है। परन्तु कभी-कभी हम सेवा को बन्धन बना देते हैं। सेवा में रॉयल इच्छाएँ हमें बन्धन में बाँधती हैं। सेवा में स्वार्थ भी बन्धन का कारण है। तो हमें याद रहे कि जो सेवा स्थिति को डगमग करे,कर्मातीत होने में विघ्न लगे वह यथार्थ सेवा नहीं। सेवा का बल हमारी स्थिति को आगे बढ़ाता है, हमें आनन्दित करता है व माया-जीत बनाता है। तो हम देख लें कि कोई सेवा हमें कर्मातीत बनने में बन्धन तो नहीं है। जैसे पिताश्री सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी सम्भालते हुए भी सदा बन्धन मुक्त रहे, वैसे ही सेवा की ज़िम्मेदारी हमें बन्धन मुक्त बनाये।

आठवाँ बन्धन है-पदार्थों का... पदार्थों की उलझन, उन्हें प्राप्ति की आकांक्षा, पुनः उन्हें उपयोग की उलझन मनुष्य को उलझाये रखती है। परन्तु पदार्थ व वैभव हमें बन्धन में न बाँधें—इसके लिए हम राजा जनक की एक कहानी याद करें। एक सन्यासी ने राजा जनक से पूछा कि राजन् आप तो महलों में रहते हैं, इतने पदार्थों का उपभोग कर रहे हैं,नाच, गाना, दास-दासी रखते हैं, आप कैसे योगी या विदेही हो सकते हैं? क्या आप इन सबमें लिप्त नहीं हैं? जनक ने उत्तर दिया—महात्मन् "मैं महलों में रहता हूँ, परन्तु महल मुझमें नहीं रहते, मैं वस्तुओं का उपयोग करता हूँ, परन्तु वस्तुएँ मेरा उपभोग नहीं करतीं।" बस यही रहस्य है—अनासक्त होने का।

इस प्रकार स्वयं को हम चैक करें कि कर्मातीत होने में हमारे मार्ग में अब कौन-सा विघ्न है, बन्धन है। उन्हें काटकर हम शीघ्र ही मुक्त बनें। इन सभी बन्धनों को वैराग्य की तलवार से सहज ही काटा जा सकता है। सम्पूर्ण विश्व को बन्धन-मुक्त बनाने वाले भगवान के बच्चे होकर भी यदि हम बन्धन युक्त रहे तो हमे भगवान के बच्चे कौन कहेगा?

बेहद का वैराग्य

जिन्होंने पिताश्री जी को देखा, वे जानते हैं कि प्रारम्भ से ही उनका मन पूर्ण विरक्त, वैराग्य से भरपूर था। यह वैराग्य

विचारों का व्याकरण

ले. ब्रह्माकुमारी सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

हम सभी जानते हैं कि भाषा भाव की अभिव्यक्ति का एक साधन है। भाषा सीखने और सिखाने का भी एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह एक प्रसाधन है। अगर भाषा न होती तो यह संसार गूंगों के संसार की तरह होता और कथा, कविता, भाषण, गीत, नाटकीय संवाद के बिना यह नीरस हो जाता। भाषा ही के कारण दर्शन, दिग्दर्शन, ज्ञान-विज्ञान और चर्चा-परिचर्चा का अस्तित्व है।

परन्तु इस विषय में ध्यान देने योग्य बात यह है कि भाषा में व्याकरण का वही स्थान है जैसे मोटरगाड़ी में ब्रेक, क्लच, गियर और स्टियर व्हील आदि का स्थान है। यदि इन पर ड्राईवर का कन्ट्रोल न हो अथवा यदि उसे इनका ज्ञान न हो तो कभी भी दुर्घटना हो सकती है। यों कार एक बहुत अच्छा वाहन है परन्तु उसकी उपयोगिता में इन पूर्वोक्त साधनों का प्रयोग अति आवश्यक है। ठीक उसी प्रकार भाषा में विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक चिन्ह, आश्चर्यवाचक चिन्ह इत्यादि के प्रयोग का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका सही प्रयोग न करने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है। उदाहरण के तौर पर—'रामू, श्यामू की मृत्यु हो गई।' अब इस वाक्य को पढ़कर मालूम होता है कि कोई तीसरा व्यक्ति रामू को श्यामू की मृत्यु का समाचार दे रहा है। लेकिन अगर यही वाक्य इस प्रकार लिख दिया जाए कि 'रामू श्यामू की मृत्यु हो गई अर्थात् 'रामू' के बाद अर्द्धविराम न लगाया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इससे तो लगता है कि रामू श्यामू दोनों की मृत्यु हो गई।

जैसे भाषा में व्याकारण का प्रयोग ज़रूरी है, वैसे ही विचारों का भी अपना एक सूक्ष्म प्रकार का व्याकरण है। हम पहले कह आये हैं कि भाषा विचार अभिव्यक्ति का एक साधन है। अतः जब भाषा का व्याकरण है तो विचारों का भी अपना व्याकरण होगा ही। हां, जैसे कार को विराम देने अथवा अर्द्धविराम देने का साधन अलग प्रकार का है, वैसे ही विचारों के विराम एवं अर्द्धविराम आदि भी भाषा के विराम, अर्द्धविराम आदि से भिन्न प्रकार के हैं।

विचारों अथवा भावों का व्याकरण कौन-सा है?

'विराम' का अर्थ है रोकना और 'अर्द्धविराम' का अर्थ है—दो या अधिक वाक्यांशों के बीच में कुछ थोड़ा-सा रुकना। इनके प्रयोग से ही मालूम होता है कि एक ही वाक्य चल रहा है या दूसरी बात कही जा रही है। इसी प्रकार प्रश्न वाचक चिन्ह इस बात का बोध कराता है कि इस वाक्य द्वारा कोई बात बताई नहीं गई बल्कि पूछी गई है। आश्चर्यवाचक चिह्न के द्वारा लेखक यह अभिव्यक्त करता है कि इस बात का उसे आश्चर्य है। इस प्रकार व्याकरण के चिन्ह लेखक के भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। यदि दो वाक्यों के बीच विराम चिन्ह का प्रयोग न किया जाए तो पता ही नहीं चलेगा कि एक वाक्य कहां समाप्त होता है और दूसरा कहां से प्रारम्भ होता है। इसी कारण से इनका प्रयोग ज़रूरी है। जो इनका सही प्रयोग जानता है, उसे भाषा-विशेषज्ञ, व्याकरण-विशेषज्ञ आदि कहा जाता है।

परन्तु आज जब किसी को भाषा ज्ञान दिया जाता है, उसे व्याकरण का ज्ञान तो अनिवार्य रूप से कराया जाता है परन्तु कहीं भी मनुष्य को भावों का व्याकरण नहीं पढ़ाया जाता। इसी कारण से लोग आज एक-दूसरे के भाव को नहीं समझते और संसार में झगड़े हो रहे हैं। हम जिस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा लेते हैं, वहां हमें यह महत्त्वपूर्ण व्याकरण पढ़ाया जाता है। इसके सही प्रयोग के बिना मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान पर आधिपत्य प्राप्त नहीं होता।

अब थोड़ा-सा यहां यह बताना ज़रूरी होगा कि आध्यात्म में विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक तथा आश्चर्यवाचक चिन्ह का क्या स्वरूप होता है और वे कब तथा कैसे प्रयोग किये जाते हैं। सबसे पहले हम विराम ही को ले लेते हैं।

साधारणतः ऐसा होता है कि मनुष्य विचारों के बहाव

में बह जाता है। वह विचारों को प्रवाहित नहीं करता, विचार ही उसे प्रवाहित करते हैं। मन में एक के बाद एक विचार का तांता लगा ही रहता है। इनमें से बहुत-से विचार अनावश्यक, अनुपयोगी अथवा व्यर्थ भी होते हैं। इसी बात को सामने रखते हुए कहा गया है कि मनुष्य को अपने विचारों को **'विराम'** देना भी आना चाहिए। यहां विराम का वैसा ही स्थान है जैसे रेलगाड़ी के लिये स्टेशन का। अगर स्टेशन पर गाड़ी रुकने के बजाय चलती ही जाएगी तो गाड़ियों का क्या हाल होगा, यात्रियों का क्या हाल होगा और जो माल व चिट्ठियों के थैले वहां उतारने हैं, उनका क्या होगा तथा देखने वालों को भी कैसा लगेगा? कई बार हम सुनते अथवा पढ़ते हैं कि बस अथवा ट्रक अपने स्थान पर रुकते नहीं हैं और किसी दुकान या बिजली के खम्भे से जाकर टकराते हैं। इससे भी अधिक खतरनाक है विचारों को विराम न दे सकना। एक विराम लगाने की योग्यता न होने के कारण कई लोगों को रात-भर नींद नहीं आती, अन्य कई को हृदय रोग हो जाता है और कई चिन्ता के मारे घुलते जाते हैं। दूसरे कई ऐसी बात कह जाते हैं कि जिससे अपना प्रभाव भी खो बैठते हैं, सम्बन्ध भी बिगाड़ देते हैं। इतना ही नहीं, आगे के लिए वे अपने संस्कार भी बिगाड़ बैठते हैं और कर्मों के ऋण खाते को भी बढ़ाते जाते हैं।

अंग्रेजी भाषा में विराम जिसे फुल स्टॉप (Full Stop) कहते हैं, एक बिन्दी मात्र ही होता है और बिन्दी आत्मा और परमात्मा का भी प्रतीक है—शिव- लिंग और सालिग्राम एक वृहद बिन्दी के जैसे ही तो हैं। हिन्दी में भी आजकल कई पत्रों-पत्रिकाओं में ऐसा ही विराम चिन्ह प्रयोग होने लगा है। परम्परा से हिन्दी में जो विराम चिह्न का प्रयोग होता चला आ रहा है, वह दीवार की तरह का है। दीवार का होना भी बन्द करने की निशानी है। हिन्दी में विराम का चिन्ह रोमन तथा अन्य कई भाषाओं में एक (।) की तरह भी होता है। इस प्रकार बिन्दु स्वरूप आत्मा में स्थित होना अथवा ज्योति बिन्दु स्वरूप शिव बाबा की स्मृति में टिकना अथवा जीवन के एकमात्र सहारे परमपिता परमात्मा में मन को स्थित करना ही अपने विचारों को विराम देना है जिस से मन, बुद्धि को भी विश्राम मिल जाता है और यह बिन्दी भविष्य के लिए राजतिलक रूपी बिन्दी बन जाती है क्योंकि जो मन को बिन्दी लगा सकता है, वही शासनाधिकारी बनता है।

इसी प्रकार प्रश्न भी कहां करना है, कहां नहीं करना है—यह भी एक विशेष योग्यता है। कई लोग दूसरों से कुछ ऐसे प्रश्न पूछ लेते हैं जिन्हें पूछने से न उनका कोई प्रयोजन सिद्ध होता है न ही उन्हें करने का अधिकार है। कुछ लोग तो ऐसे प्रश्न कर लेते हैं जैसे कि वे किसी छानबीन अथवा जांच-पड़ताल एजेन्सी (Investigative Agency) के प्रतिनिधि हों। उनके प्रश्न सुन कर ही दूसरों को खीज होती है और आखिर कोई किसी दिन कह ही देता है कि आपका इसमें क्या मतलब? प्रश्न वह पूछना चाहिए कि जिससे मनुष्य को ज्ञान लाभ हो, किसी उच्च लक्ष्य की सिद्धि हो, जीवन की किसी समस्या का समाधान मिले,पूछने से चित्त सदा के लिए प्रसन्न हो जाये। इस बात को ध्यान में रखते हुए मैं कौन हूं? इस संसार में कहां से आया हूं? कर्म-अकर्म-विकर्म की क्या गति है? परमपिता परमात्मा का क्या स्वरूप है—ऐसे ही प्रश्न अष्टव्य हैं। ऐसे प्रश्नों का समाधान मिल पाने के बाद केवल वो प्रश्न पूछने चाहिएं जिससे आध्यात्मिक पुरुषार्थ में तीव्रता आये। उदाहरण के तौर पर हम डबल लाइट कैसे बनें? अपने दैनिक चार्ट को और अच्छा कैसे करें? मनसा सेवा की विधि क्या है? इस प्रकार के प्रश्न पूछना ही श्रेष्ठ है।

इसी प्रकार, ऐसे तो संसार में अनेक प्रकार के आश्चर्य हैं परन्तु कुछ ऐसे आश्चर्य हैं कि जिनको जितनी बार सोचा और जाना जाये, उनसे आश्चर्य का भाव पुन: पुन: जागृत होता ही रहता है और वे आश्चर्य हैं भी कल्याणकारी और मधुर। उदाहरण के तौर पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्योति बिन्दु आत्मा में ८४ जन्मों के संस्कारों का होना, सर्वशक्तिमान् परमात्मा का एक मानव तन में प्रवेश होकर ज्ञान सुनाते हुए भी साधारण प्रतीत होना एवं गुप्त रहना आदि आदि बातें ऐसी हैं जो नित्य निरन्तर एक अचम्भा ही हैं। ऐसे ही विषय को लेकर आश्चर्यान्वित होना एक सुखद अनुभूति भी साथ-साथ देता है।

संक्षेप में, कहने का भाव यह है कि भावों के उपरोक्त प्रकार के व्याकरण के विषय में भी जानना चाहिए तभी हमारा जीवन सफलता-सम्पन्न जीवन हो सकता है। हमारा योगाभ्यास भी तभी परिपक्व होगा, हमारी प्रवृत्ति भी तभी शुद्ध होगी और हमारा जीवन भी तभी महान बनेगा जब हम मन को विराम और अर्द्धविराम देने की कला जानेंगे।

निश्चिन्त

मानो एक राजकुमार का पिता एक बड़ी भूमि का मालिक है अगर उस राजकुमार का सम्बन्ध अपने पिता से युक्त है तो क्या उसे कभी धन-धान्य इत्यादि की चिन्ता हो सकती है? उसके लिए ही तो उस राजा की समस्त राजाई तथा प्रजा है अथवा सर्व सुख सामग्री है। **इसी प्रकार, जो मनुष्य स्वयं को त्रिलोकीनाथ, सर्वशक्तिमान्, सुखदाता पिता परमात्मा की सन्तान निश्चय करता है, तो क्या उसे भी कभी किसी बात की चिन्ता हो सकती है? वह तो नारायणी नशे में अथवा मौलाई मस्ती में ही हरदम रहता होगा, क्योंकि ऐसे निश्चय-बुद्धि, स्नेहयुक्त मनुष्य पर ही तो परमपिता परमात्मा का सब कुछ न्योछावर है। बाप की प्रापर्टी (सम्पत्ति) बच्चे ही के लिए तो होती है। तो ऐसे समझो कि चिन्ता-युक्त मनुष्यों को अभी परमात्मा पर निश्चय नहीं है; उसका परमात्मा से सम्बन्ध जुटा हुआ नहीं है! उसने अभी परमात्मा ही को अपने एकमात्र आधार के रूप में नहीं अपनाया अर्थात् अभी उसे परमात्मा की पहचान नहीं है और यह ज्ञान नहीं है कि भले ही सब की बेड़ी डोलती है, परन्तु परमात्मा का सहारा लेने वाले की बेड़ी कभी भी डूबती नहीं है।**

ज्ञानी मनुष्य तो तूफ़ानों और विघ्नों में निश्चिन्त रहता है। उसे तो एक ही चिन्ता रहती है कि मैं इस सृष्टि को पवित्र बनाने, सुखी करने, पिता परमात्मा की पहचान देने के निमित्त कैसे बनूं। परन्तु इस शुभ चिन्ता को कोई 'चिन्ता' थोड़े ही कहा जा सकता है? यह तो लग्न है। जिस मनुष्य को ऐसी चिन्ता, ऐसी लग्न है, उसे और चिन्ता ही कौन-सी हो सकती है? और चिन्ता के लिए उसके पास समय ही कहाँ? जबकि वह जानता है कि अनहोनी कभी होती नहीं और होनी हो के रहती है, तो वह मनुष्य पहले से ही व्यर्थ चिन्ता करके स्वयं को परेशान क्यों करे, ग़म का दाग क्यों लगावे और अपने ही जीवन को दुखी बनाकर श्वास वृथा क्यों गँवाये? वह तो सदा ज्ञान का चिन्तन करते हुए परमपिता परमात्मा की आनन्द की लहरों में सुख से विश्राम करता है। इस दुनिया में रहते हुए भी, मानो, वह अन्तर में निर्वाण और जीवनमुक्ति का अनुभव करता है। इसलिए आप निश्चिन्त होकर ज्ञान का चिन्तन करेंगे तब आप को अतीन्द्रिय सुख का प्रत्यक्ष अनुभव होगा। जबकि अब हम को सारे संसार का खिवैया स्वयं परमपिता परमात्मा मिला है और अब चढ़ती कला (उन्नति) ही होनी है तो फिर हमें चिन्ता हो नहीं सकती। यही तो भोगी और योगी के जीवन में अन्तर है!

हे आदि देव महान!

हे आदि देव महान्, हे धरती के भगवान्।
युगों-२ तक याद करेगा तुमको सकल जहान।।
तुमने पल भर में काटे, लोभ, क्रोध के दृढ़तर जाल
कोई भी टिक सका न तेरे सन्मुख आकर जग-जंजाल
बांध न पाई हद की दुनिया तुमको अपनी सीमाओं में
रहे अचल, अडोल, कर्त्तव्यनिष्ठ तुम जीवन-झंझाओं में
यश-अपयश, निन्दा-स्तुति और सुख-दुःख में रहे समान
युगों-२ तक याद करेगा तुमको......

वो मंद-२ मधुर मुस्कान सबके मन को हर लेती थी
उनकी दृष्टि वरदानों से झोली सबकी भर देती थी
आया जो भी सम्पर्क में, फर्क हुए सब दूर
युक्ति और तर्क साथ में प्रेम भाव भरपूर
उनकी ज्ञान कलाओं से और अलौकिक प्रतिभाओं से
प्रभावित होकर झुक जाते बड़े-बड़े विद्वान
युगों-२ तक याद करेगा तुमको.....

वो शिव की मधुर स्मृति में रहते थे तल्लीन सदा
वो स्वमान की सीट पर रहते थे आसीन सदा
परम शान्त मुद्राधारी जन-जन के हितकारी
सर्व-स्नेही, निराभिमानी मृदु-भाषी सुखकारी
उन जैसा मिलन कठिन, थे सर्व गुणों की खान
युगों-२ तक याद करेगा तुमको.....

सागर नहीं, पर शिव के संग, तुम सागर सम हो गये बाबा
जिसकी सभी कलाएं पूर्ण ऐसे चन्दा हो तुम बाबा
हद का चन्दा तो निशिवासर, निशि में प्रकाश दर्शाता है
यह रात्रि-दिवस, सदा-सर्वदा ज्ञान-रश्मि बिखराता है
अपनी शीतल किरणों से किया सभी को सुख प्रदान
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको....

कर्मातीत बने जब आप तो इस देह का अवसान किया
सम्पूर्ण फरिश्ता बन करके इस जग से महाप्रयाण किया
अपने तप और त्याग से सींचा मधुबन का उपवन है
इस १९वें स्मृति दिवस पर वंदन है, अभिनन्दन है
श्रद्धा के सुरक्षित सुमन स्वीकारो ओ नर-तन-धारी भगवान्
युगों-युगों तक याद करेगा तुमको....

ब्रह्माकुमार सूरज प्रकाश, सहारनपुर।

देखा है हमने उनको

बी.के. सूरजमुखी, रूद्रपुर

सतत घूमते सृष्टि चक्र के इतिहास में अनेक महापुरुषों की गाथाएं सुनी होंगी। विशिष्ट व्यक्तियों की कहानियाँ लिखी या पढ़ी होंगी। निःसन्देह इस धरती पर ऐसी महान् विभूतियां रह गई हैं जिनका यशगान आज भी होता आ रहा है। ऐसे भी महान सन्त हुए हैं जो अपना जीवन त्याग, तपस्या में बिता गये। ऐसे भी शिरोमणी भक्त हुए हैं जो भगवान् की खातिर जग को भूला गये। इसी धरती पर योगी भी रह गये और ज्ञानी भी। परन्तु हम यहां उस महान् विभूति का, महान् तपस्वी का, सच्चे राजयोगी का, बेहद के त्यागी का वर्णन करना चाहते हैं, देखा था जिन्हे हमने...संसार में ऐसा कार्य करते जिसे कोई कर न सका था....वह कार्य किया हम सब के प्यारे पिताजी ब्रहमा बाबा ने।

जीवन में रंग भरते

थे तो साधारण ही परन्तु विशेषताओं की मूरत्त थे...अपने मधुर स्वभाव से, स्नेह भरी दृष्टि से हर हृदय को चुम्बक की तरह प्रभावित कर लेते थे। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व, उनकी चाल, रहन सहन, तथा शिष्टाचार चित्त को चुराने वाला था। **मानव जीवन के प्रथम कलाकार हुए हैं हमारे ब्रहमा बाबा।**...पदमभाग्यशाली हैं वे जिन्होंने उनके बच्चे बनकर अपना जीवन बदल दिया। और उनके साथ आज भी ब्रहमा कुमार, कुमारी बन विश्व-सेवा कर रहे हैं। कलियुगी सृष्टि की तमोप्रधान आत्माएं जिन्हें आशा की किरण की तलाश थी...उन्हें तमोप्रधान, विकारी, शूद्र जीवन से निकाल ब्राहमण बना दिया...क्या जीवन में रंग नहीं भर दिया? इसे और क्या कहेंगे? विषय कुंड से निकाल कमल आसन-धारी बना दिया, सारे विश्व की आत्माओं को बच्चे बना दिया।

देखा था रूहों से बातें करते

ऐसी रूहानी दृष्टि से बाबा निहारते थे हर बच्चे को कि देह का भान मिट जाता था। उन्हें भी अपने को आत्मा निश्चय करने में मेहनत नहीं करनी पड़ी। बाबा की अमिट छाप आज भी ब्रहमा-वत्सों को भूलाये नहीं भूलती। जिस तन में बैठकर शिवबाबा ने रूहों से बात की...वे ही हमारे ब्रहमाबाबा हैं, जिन्हें हमने देखा है...रूहों से बात करते...कोई धर्म भेद नहीं, जाति भेद नहीं, जिस्म भेद नहीं...सब आत्माएं हैं सबका एक परमपिता है। बाबा ने कभी भी किसी को अपने भी देह का परिचय नहीं दिया। बाबा की रूहानी प्यार से भरी बातें रूहों को प्रभावित कर लेती थीं कि बच्चे, बूढ़े, नौजवान युवक-युवतियां सब देहभान को भूल जाते थे।...

स्वर्णिम संसार रचते देखा

हमने बाबा को सदा लग्न में मग्न देखा, उनकी दृष्टि में नई दुनियां के नजारे थे। संसार में बहुतों ने दृढ़संकल्प कर अनेक कार्य सफल किये होंगे लेकिन असम्भव कार्य सम्भव करने वाले ब्रहमा बाबा आज हमारे गौरव हैं, जिन्होंने विषय वासना की बाढ़ का पुल बनकर सबको राह दिखाई...जिन्होंने पुरानी दुनिया मिट जाने से पहले नई दुनिया स्वर्णिम दुनियां की कलम लगाई।

देखा बेहद का त्याग करते

जिनका सारा जीवन भगवान् के काम आया हो वही सच्चा त्याग माना जाता है...पांच विकारों को छोड़ सिर्फ पवित्र रह लेना ही पर्याप्त नहीं होता क्योंकि ऐसे तो बहुत हुए हैं परन्तु वह कुछ कर नहीं पाये। जिनका सब कुछ भगवान का बन गया, लौकिक-अलौकिक हो गया, तन प्रभु की सेवा में समर्पित हो गया...धन रूद्र ज्ञान यज्ञ में स्वाह हो गया, मन भी प्रभु की याद में लवलीनहो गयाऐसा बेहद त्याग एक ही आत्मा कर पाई...जिनका त्याग अमर है...जिनके त्याग से हर आत्मा का भाग्य बना...जिनके जीवन से सबको सुख मिला जिनकी पालना से सबको आत्मिक सच्चा प्यार मिला...उन्हें कौन भूल सकता है।

नजर से निहाल किया

जिस पर बाबा की नजर पड़ी वह जादू का काम कर गई—जिन्हें एक बार भी वह पावन दृष्टि मिली होगी उनका जीवन पावन बन गया...यह खुदाई जादू तो खुदा का ही है...ये ब्रहमा बाबा कमाल कर गये...सब कुछ बेमिसाल कर गये...जो कुछ भी हो रहा है, वह परम कल्याणकारी है...ऐसा पाठ पढ़ा गये।

हर बच्चे को पहले मिलन में जन्म-जन्म का प्यार देने वाले बाबा...जो सबको महानता की दृष्टि से देखते थे...कि बच्चे मुझे 5000 वर्ष के बाद मिले हैं...ये ही संसार में कमाल कर दिखा सकते हैं...उनकी शुभचिन्तक दृष्टि से हर आत्मा निर्बल से बलवान बन गई।

बाबा को हमने देखा कर्म अलौकिक करते

कर्मों की गहन गति इस संसार का सबसे गहरा प्रश्न है...इसका ज्ञान ही सारे वेदों,शास्त्रों का सार है,बाबा के कर्मों की अलौकिकता से सारा विश्व परिवर्तन होने लगा। बाबा का ये नियम था, अटल धारणा थी कि जैसा कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और भी वैसा ही करेंगे...बाबा ने स्वयं पर अटेन्शन दिया...और हमने भी देखा—'जिन्होंने बाबा को फालो किया, स्वयं के पुरूषार्थ को महत्व दिया, अपने को सदा चैक किया

शेष पृष्ट ११ पर

इतना प्यार करेगा कौन

ब्र.कु. आस्पी, बम्बई

हरेक मनुष्य के जीवन में कोई न कोई दिन वा घड़ी सुहावनी आ ही जाती है जो अविस्मरणीय बन जाती है। फिर उसी के सहारे अपनी जिंदगी की नैया भवसागर पार हो जाती है।

एक बार गामदेवी (बम्बई) में प्यारे बाबा का पत्र आया कि आबू में बापदादा प्रदर्शनी रखना चाहते हैं। इसलिए सर्विसेबल भाई भेजो। क्लास में पूछा गया कौन तैयार है? नम्बर मेरा लगा। दादी कुमारका जी ने कहा आस्पी भाई आज शाम की गाड़ी से चले जाओ। मैं घर गया। मेरे मातापिताजी उस वक्त दिल्ली रहते थे। कहीं से भी पैसे का प्रबन्ध ले नहीं सका। तो मैं वापस सेंटर पर आया और दादीजी से कहा कि आज नहीं, कल जाऊँगा। लेकिन दादीजी सब कुछ समझ गयीं। मुझे कहा कि आप ठीक समय पर स्टेशन पर पहुंच जाओ। आज्ञाकारी विद्यार्थी की तरह मैं स्टेशन पर पहुंच गया। इससे पहले मुझे मालूम नहीं था कि ''कृष्ण सुदामा'' का गाया हुआ पार्ट रिपीट होने वाला है। स्टेशन पर मुझे सौ रुपये और बम्बई से आबू रोड की वापसी टिकट दादीजी ने निर्वैर भाई के द्वारा भेजी थी। और मेरे नयनो में आनन्दाश्रु भर आए कि ''सचमुच, 'सुदामा' अपने 'भगवान को' मिलने के लिए जा रहा है।''

उस समय मैं प्यारे बाबा के साथ करीब एक मास से भी ज्यादा रहा और हर दिन कोई-न-कोई नई बातें बापदादा से जानने को मिलती ही रहीं।

एक दिन की बात है मैं सुबह में जल्दी उठकर बगीचे से दो फूल तोड़कर लाया और बापदादा को दिये। उनमें एक फूल बड़ा था और एक फूल छोटा था। बाबा ने कहा—'मैं बाप हूँ। मुझे बच्चों को याद करना पड़ता है सो मैं छोटा फूल लेता हूँ। और तुम बच्चों को बाप को याद करना पड़ता है सो बड़ा फूल तुम रखो।'' ऐसा बोल के बड़ा फूल मुझे दिया अपनी यादगार के रूप में। इस तरह बच्चों को बापदादा की याद सदा, निरंतर रहे इसके लिए अनेक युक्तियां प्रत्यक्ष बताते रहते थे।

एक दिन जब सुबह की प्रदर्शनी के बाद पाण्डव भवन लौटा, तो देखा कि बापदादा झूले पर बैठे थे और आजू-बाजू में बारी-बारी से भाई बहनें बैठकर झूले में झूल रहे थे। बाबा सभी को 'हंस-हंस' कर बुला रहे थे। आखिर मेरी भी बारी आयी। एक बाजू में निर्वैर बैठे दूसरी बाजू में हम थे। लेकिन झूला झुलाते समय बाबा बिल्कुल ही खामोश थे। उपराम अवस्था में थे। हमारी बारी पूरी हुई। हम उतर गये। लेकिन सारा दिन हमने खामोशी में बिताया। दूसरे दिन सुबह ही बाबा के कमरे में गये और बाबा को उसका राज पूछा तो बाबा ने कहा—''लाडले बच्चे, राज़ यही है कि स्थूल झूला तो ऊपर जाता है बीच में आकर पीछे जाता है। मतलब कि जीवन में चढ़ाव-उतराव, सुख-दुःख का खेल तो आयेगा ही, लेकिन फिर भी उस समय बाप दादा की याद में अन्तर्मुख रहना। न सुख में हद से बाहर जाना, न दुःख में रोना। अंतर्मुख होकर बाबा की याद में सदा मस्त रहना, अतीन्द्रिय सुख में झूलना।''

एक बार मैंने बाबा से कहा कि बाबा, मुझे सब टोकते हैं कि तुम पारसी हो,तो बाबा आप मेरा नाम बदल दो। प्यारे बाबा ने कहा—'एक तुम्हारे नाम में मैं गुप्त रूप में हूं।' तो मैंने पूछा—कैसे? तो सबके दिलको जानने वाले बागवान बाबा ने कहा—देखो, तुम्हारा नाम बताओ अंग्रेजी में। अंग्रेजी में मेरा नाम है—A S P I

तो बाबा ने कहा कि—

A—माना—आत्मा
S—माना—To See (देखना)
P.—माना—परमात्मा
I—माना—मैं (शिव बाबा)

अर्थात् मैं परमपिता शिव तुझ आत्मा को देख रहा हूं, साथ ही हूं।

एक दिन बाप दादा ने कहा कि देखो बच्चे, कभी भी किसी बात पर निंदा नहीं करना, गिरे हुए को उठाना, संभालना। सभी मेरे बच्चे ही हैं। बच्चे, मैं तो सुख-दुःख से न्यारा हूं। लेकिन फिर भी जब बच्चियां विकार के कारण मार खाती हैं तो मुझे बहुत तरस आता है। लेकिन ड्रामा के अंदर बाबा बंधायमान है। बाबा भी क्या करे, अगर उस समय बाबा की याद रहे तो अपने आपको बचा सकते हैं।

सबसे बड़ा अदभुत पार्ट (Wonderful Part) साकार बाबा में यह देखा कि बाबा सब कुछ जानते हुए भी अनजान रहते। फूलों से भी प्यार तो कांटों से भी इतना ही प्यार। और ऐसी स्टेज में तो सिर्फ भगवान ही रह सकता है! और यही सबसे बड़ी भाग्य की बात है कि—हमें भगवान मिला हुआ है, परमात्मा मिला है जो अपनी गोद में समा लेता है और दुनिया की हरेक समस्या से बचा लेता है। ऐसे प्यारे बाबुल के लिए जितना भी कहें कम ही है।

सहयोग निर्माण करने की दस सूत्रीय विधियां

बी.के. रमेश, गामदेवी, बंबई

संगमयुग बहुत महत्त्वपूर्ण युग है। इसमें हम आत्मायें परमपिता परमात्मा का संग प्राप्त करके हर प्रकार के गम से (संग + गम = संगम) मुक्त होते हैं और इस युग में योग का ज्ञान हम बच्चों को मिलता है। अब तक हम बच्चे यह योग होवनहार राजयोगी आत्माओं को सिखाते थे तथा ईश्वरीय सेवा का लक्ष्य था सबको परमपिता परमात्मा के दिव्य अवतरण का संदेश देना। संदेशात्मक ध्येय से अब एक कदम आगे बढ़ते हैं और अब प्रयोगात्मक तथा सहयोगात्मक सेवा का अभियान करने का संदेश हम बच्चों को मिला है।

वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में प्रयोग करके हरएक चीज या वस्तु का अनुभव करता है। अनुभवात्मक प्रयोग से वैज्ञानिक अपने विचारों की यथार्थता तथा सार्थकता सिद्ध करता है। उसी तरह साइलेंस के क्षेत्र के अनुभवी ज्ञानी आत्माएं अपने योग के प्रयोग के अनुभवों से अब सृष्टि में सिद्ध करके दिखायेंगी कि इस सर्वश्रेष्ठ योग तथा ईश्वरीय ज्ञान से आप अपना वर्तमान जीवन सार्थक कर सकते हो तथा भविष्य के जीवन में सर्वश्रेष्ठ उच्च पद पा सकते हो। राजयोगी बनकर अर्थात इस ईश्वरीय ज्ञान द्वारा प्रस्थापित सभी ईश्वरीय मर्यादाएं तथा धारणाएं जीवन में धारण करके सर्वश्रेष्ठ पद उस सर्वोत्तम सतयुगी सृष्टि में प्राप्त कर सकते हो।

किन्तु सब आत्माएं इतने महान आदर्श धारणाओं को जीवन में धारण नहीं कर सकतीं। कई इस ईश्वरीय ज्ञान की सभी बातों तथा सिद्धान्तों को अपने संस्कार या सिद्धान्तों के कारण संपूर्ण रूप से अपना नहीं सकते। उसी कारण वे जितना भी हो सके उतनी मर्यादाओं को या सिद्धांतों को यथांशक्ति अपना सकें तो ऐसी आत्माओं के लिए रहमदिल परमपिता परमात्मा ने सहयोगात्मक सेवा का प्लान बनाया है। सचमुच ये विचार और कार्य बहुत दिव्य हैं और परमपिता परमात्मा ही अपने सिद्धांतों में अपने बच्चों के लिये परिवर्तन कर सकते हैं। जो जितनी धारणा करे या जितना भी सहयोग दे इस ईश्वरीय कार्य में, उतना उन आत्माओं को फल देना। इस प्रकार कर्मों के सिद्धांत को आधारशिला बनाकर यह सहयोमात्मक सेवा का प्लान बनाया है।

इस ईश्वरीय कार्य में सहयोग द्वारा अपना योगदान देना और उसी के द्वारा अपना श्रेष्ठ पद प्राप्त करना, यह उस कार्य का लक्ष्य है। शायद यह सर्वश्रेष्ठ पद ना भी हो परंतु अन्य सभी प्रकार के मत, पंथ या धर्म के आधार पर प्राप्त होनेवाला पद या प्राप्ति से तो ज़रूर श्रेष्ठ है। सतयुगी या त्रेतायुगी सृष्टि में यथाशक्ति पद प्राप्त करना यह द्वापर से आने वाली सृष्टि से तो श्रेष्ठ बात है। उसी कारण वह सर्वश्रेष्ठ (Best) पद नहीं तो बेहतर (Better) पद भी प्राप्त करें तो भी अच्छा है। कुछ भी भाग्य न बनाने के बजाए थोड़ा भी भाग्य ब्रह्मा के दिन की सृष्टि में प्राप्त करना यह बात भी अच्छी है। और कई आत्माएं सहयोग की सीढ़ी द्वारा राजयोगी भी बन सकती हैं। सहयोग देने के कारण होनेवाले अनुभवों के आधार पर कई विचारशील आत्माएं अपने पुराने सिद्धांतों और संस्कारों का पूर्ण रूप से समर्पण करके राजयोगी जीवन भी बना सकती हैं, यही शुभ भाव इस सहयोगात्मक सेवा का लक्ष्य है।

सहयोग कैसे प्राप्त किया जावे यह बात भी परमपिता परमात्मा हम बच्चों को सिखाते हैं। मधुबन में २/११/८७ को विविध स्थानों से आये बहन-भाइयों से प्यारे बापदादा जब मिल रहे थे तब उन्हें सबका सहयोग कैसे प्राप्त किया जाए यह बात अलग-२ रूप से बताते गये। मैंने इन बातों को नोट करके उसी के आधार पर हम बच्चे यह सहयोग कैसे प्राप्त किया जाए यह नया तरीका हम सब सीखें तो अच्छा है, इसी भाव से यह लेख लिखा है। दुनिया में तो सहयोग मांगा जाता है। परंतु "मांगने से मरना अच्छा" यह सिद्धांत हमें जरूर ध्यान में रखना है। इस सिद्धांत को भंग नहीं करना है। किंतु सहयोगी आत्मा स्वयं अपने आप कैसे अपना भाग्य बनाने के लिए अपनी स्फुर्णा के आधार पर सामने से आफर (Offer) करे, यह लक्ष्य है। अपने आप करे वो देवता और मांगने पर करे वह है मनुष्य यह बात भी ध्यान में रखनी है।

अब तक हम आत्माओं ने राजयोगी बच्चों की सेवा की है किंतु सहयोगी आत्माओं की सेवा कैसे करें यह एक बहुत बड़ी चुनौती (Challenge) हमारे सामने है। टके सेर खाजा और टके सेर भाजी ऐसा अंधेर नगरी का कानून यहां नहीं है। रूहानी डॉक्टर बनकर स्वयं स्फूर्ति सहयोग कैसे सामने वाले व्यक्ति में उत्पन्न हो, ऐसा कार्य अब हमें करना है। जैसे गर्मी के मौसम के कपड़े अलग और सर्दी के मौसम के कपड़े अलग—इस प्रकार से विभिन्न तरीके अब अपनाना हैं जिससे सफलता ज्यादा और मेहनत कम हो। यह नई विधि सहयोगात्मक सेवा में अपनायेंगे तो सफलता ज्यादा होगी यह विधाता बाप ने अपने विधान में स्पष्ट किया।

(१) सहयोगी आत्मा बनाने लिये उस आत्मा को स्नेही आत्मा बनाइये। आज की सृष्टि में अनेक व्यक्तियों के सब स्नेही बनते हैं परंतु अब बाप के स्नेही बनाइये तो बाप का स्नेही सहयोगी जरूर बनेगा। स्नेह प्रदान करने की विधि हमें सीखनी पड़ेगी। क्रोध करने की, मोह या लोभ करने की विधि आती है। परमात्मा से स्नेह करना भी आता है अब हमें मास्टर स्नेह के सागर बनकर जैसे मां-बाप रहम भाव से अपने बच्चों को स्नेह दे सकते हैं, उसी तरह सामने वाले व्यक्ति को ईश्वरीय स्नेह के आधार पर बाप का स्नेही आत्मा बनाना है। ईश्वरीय स्नेह से सहयोग के जन्मदाता बनना है। तो यह महामंत्र याद रहे-**स्नेह से सहयोग।**

(२) जगे हुए सहयोगी बनेंगे इसलिये जगाने की सेवा करो। अविनाशी रोशनी द्वारा अंधकार दूर करो। ज्ञान की रोशनी प्राप्त होने से वह आत्मा सच-झूठ को समझ सकेगी। इसलिए जगाने का प्लान बनाओ।

(३) बाप का बनाने से भी वह आत्मा सहज सहयोग देगा। माया से किनारा करना-कराना है। आज माया का इस सृष्टि में राज्य है। माया के कारण वह आत्मा बाप को पहचान नहीं सकता। एक बार बाप का बन जाए तो वह आत्मा बाप के कार्य में मददगार बन सकती है। माया और बाप इन दोनों के बीच का भेद समझाना है।

(४) सबको अपने भाग्य की पहचान करानी है। भाग्य का दर्पण सामने रखो। वर्तमान प्रचलित बातों या सेवा के आधार पर क्या भाग्य बन सकता है और इस सेवा से क्या भाग्य बन सकता है, इस बात का भेद बताने से वह सहयोग द्वारा अपना भाग्य बनाने लिये तैयार होगा। आज की सृष्टि में अनेक आत्माएं सेवा करना चाहती हैं या करती हैं। उन्हें सच्चा रास्ता मालूम नहीं उसी कारण जो भी बातें मनुष्यात्माओं ने सिखाई उसी के आधार पर सेवा करते हैं। भाग्यविधाता द्वारा प्राप्त भाग्य के दर्पण में अपनी सूरत और सीरत का दर्शन करने से जरूर वह आत्मा सहयोगी बन सकेगी। तो यह सेवा की विधि—भाग्य का दर्पण में दर्शन कराने की अब हमें सीखनी पड़ेगी।

(५) याद की खुशी की अनुभूति कराओ तो वह आत्मा खुशी की अनुभूति से खुशी-खुशी से सहयोगी बनेगा। खुशी से खुशी, खुशी का निर्माण करना यह भी एक विधि है। आज की दुनिया में अन्य सब आत्माएं दुःख, गम आदि का अनुभव कराते हैं। अतीन्द्रिय खुशी का अनुभव सिर्फ बाप की याद से ही होगा। एक बार यह दिव्य अलौकिक खुशी का अनुभव हो जाए तो वह आत्मा अपनी अनुभूति के आधार पर सहयोग का हाथ बढ़ायेगी। आज की सृष्टि में कुर्सी का सुख सबको है अब उन्हें खुशी के सुख का अनुभव कराना है तो वह आत्मा कुर्सी की प्राप्ति के पुरुषार्थ को छोड़कर राज-सिंहासन की खुशी परमात्मा के दिल तख्तनशीन बनने का पुरुषार्थ करेगा। इसलिये कुर्सी की लालसा छोड़ने का आधार है इस दिव्य खुशी की अनुभूति।

(६) उमंग उत्साह के आधार पर सहयोग का निर्माण करो। उमंग उत्साह कैसे बढ़े उसी का प्लान बनाओ। इन्वेन्शन (Invention) करो। विनाश होगा ऐसा कहने से कईयों की दिलशिकस्त हो जाती है। परंतु नई दुनिया आ रही है—परमपिता यह नई सृष्टि रच रहे हैं ऐसा कहकर उस आत्मा का आत्मविश्वास बढ़ाओ। नाहिम्मत को हिम्मतवान बनाने से—जैसे रामायण में कहानी है जांबुबल ने हनुमान में हिम्मत भरकर उसी द्वारा समुद्र पार करने की लंबी उड़ान (Long-jump) लगवाया—ऐसा इस पुरानी सृष्टि से लंबी-उड़ान (Long-jump) देकर नई सृष्टि तक पहुंचे, ऐसे प्लान बनाओ। बातें वो ही होती हैं परंतु शब्दों में अंतर होता है जिससे भावना और भाव में परिवर्तन होता है। जैसे मृत्यु तो सतयुग में भी होगा किंतु वहां है महोत्सव-एक वस्त्र छोड़कर नये वस्त्र को धारण करना—और आज है दुःख। सतयुग माना ही सर्वत्र उमंग और उत्साह।

(७) पुण्य के कार्य में सहयोगी बन रहे हैं यह लक्ष्य दो।

आज पुण्य को तो अनेक मानते हैं। पाप-पुण्य को न माननेवाले अच्छे-बुरे कर्मों को तो जरूर मानते हैं। कर्मों के सिद्धांत को माननेवालों को यथार्थ पाप और पुण्य क्या है यह बताना चाहिये। इस कार्य में सहयोगी बनाने से अनेक जन्मों की इच्छा पूर्ण होगी और प्राप्ति स्वरूप बनने से भटकना दूर हो जायेगा। यह ज्ञान सुनाना होगा। दुनियावाले अल्पकाल का पुण्य का कर्त्तव्य सिखाते हैं—अब हम आपको जन्म-जन्मांतर के लिये प्राप्ति करानेवाले यथार्थ पुण्य कर्म सिखाते हैं। इस विधि से भी सहयोग का निर्माण होगा।

(८) कल्याण की भावना जगाओ तो भी सहयोग का निर्माण कर सकते हैं। आज की सृष्टि में कल्याण की भावना जगाने-रहम की वृत्ति निर्माण करने के लिये अज्ञानी मनुष्य अनेक तरीके अपनाते हैं। अनेक मासूम बच्चों को खास इसीलिये विकलांग बनाते हैं। ऐसी-२ छोटी-बड़ी बातों का आधार लेकर के अन्य आत्मा में कल्याण की भावना जगाते हैं। परमात्मा है ही कल्याणकारी और उन्होंकी हम संतान मास्टर कल्याणकारी हैं। उसी कारण यथार्थ कल्याण क्या है उसी का ज्ञान देने से—परमात्मा का रूप है ही सदा कल्याणकारी—इस प्रकार हम सबका कैसे कल्याण करते हैं और उसी के आधार पर हम अन्यों का कल्याण कैसे करते हैं—यह विधि बताने से सहयोग का निर्माण होगा।

(९) परमात्मा परमपिता का साथ का अनुभव कराओ। अकेलेपन से कभी-कभी डर उत्पन्न होता है। अंधकार से भी डर उत्पन्न होता है, परंतु साथी मिलने से डर चला जाता है। साथी मिलने से हिम्मत आती है। रास्ता जब पार (Cross) करना होता है तो छोटा बच्चा अपने मां-बाप का हाथ पकड़ लेता है तो स्वयं मौज से—निडर बनकर रास्ता पार करता है। उसी तरह सबको परमपिता के साथ का अनुभव कराओ। साथी कैसे साथ निभा रहा है—साथ ले जाने का वायदा करता है यह बात बनाने से भक्तिमार्ग के अनेक अन्य सिद्धांतों बीच में विरोध रूप बनकर रुकावट नहीं डालेंगे। साथ के आधार पर संबंध का अनुभव होगा। अब तक संबंध का ज्ञान है—अनुभव नहीं। तो यह साथ का अनुभव उसके ज्ञान की पूर्ति करेगा। साथ के आधार पर निर्माण होने वाला संबंध का ज्ञान उस आत्मा का संपन्न जीवन बनाने के लिये प्रेरणा देगा। इसलिये बाप का साथ का अनुभव कराने की विधि हमें सीखनी पड़ेगी।

(१०) विवेक जगाओ। विवेकवान बुद्धि सच-झूठ को पहचान सकेगी। आज की सृष्टि में लोगों का विवेक खत्म हो गया है—विवेक का जैसे कि खून हो गया है। बुद्धिवान व्यक्ति का विवेक तुरंत जागृत हो सकता है। उसी कारण विविध व्यवसाय के बुद्धिशाली वर्ग के लोगों की विशेष सेवा करने से जल्दी सहयोग मिलेगा। इसलिये यह सर्व के सहयोग से सुखमय संसार के कार्यक्रम के अंतर्गत सभी वर्गों की—व्यवसाय के लोगों की सेवा का प्लान है।

यह दस सूत्रीय कार्यक्रम या दस सूत्रीय विधि के आधार पर भाग्यविधाता बाप परमपिता के कार्य में सहयोग प्रदान कराने का,सहयोगी बनाने का कार्य हम कर सकेंगे। उम्मीद है कि हम सब जरूर यह दस सूत्रीय विधि अपना करके इस सहयोगात्मक सेवा द्वारा विशेष प्रकार की नवीन ईश्वरीय सेवा कर सकेंगे।

पृष्ट १९ का शेष

किसी स्थूल घटना पर आधारित नहीं था। इसका आधार ईश्वरीय अनुभव था, यह वैराग्य ज्ञान-युक्त था। इसलिए आदि से अन्त तक उनके वैराग्य में कमी नहीं आई। कोई भी वैभव, प्राप्तियाँ या सेवा का विस्तार उनके वैराग्य को कम नहीं कर पाया। इसी महान वैराग्य की नींव पर वे महान त्यागी, महान तपस्वी व सम्पूर्ण बन्धन-मुक्त बने।

हमें भी ज्ञान-युक्त होकर बेहद का वैराग्य धारण करना है।वैराग्य मन को स्थिर करता है, वैराग्य उपराम वृत्ति बनाता है, वैराग्य सभी शौक समाप्त कर केवल ईश्वरीय मिलन का शौक उत्पन्न करता है। वैराग्यवान व्यक्ति ही अपने मन, बुद्धि व संस्कारों पर राज्य कर सकता है। अब समय समीप आ रहा है, घर जाने के दिन समीप आ रहे हैं, तो आसक्तियाँ व अनुराग क्यों? अब हमें चाहिए कि मन को पूर्ण विरक्त करें, जहाँ-जहाँ भी यह आसक्त हो, वैराग्य वृत्ति से इसे उपराम करें, तब ही हम समय से पूर्व कर्मातीत हो सकेंगे।

तो आओ...हम सभी ब्रह्मा वत्स अपने माननीय व परम पूज्य पिताश्री जी से प्रेरणा लेकर बेहद का वैराग्य धारण करें, उनके पद-चिन्हों पर चलकर कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ें। पिताश्री जी की भी यही हमसे श्रेष्ठ आशा है। उन्हें याद करते हुए हम सच्चे मन से उनकी आशाओं को पूर्ण करने का संकल्प करें। तब ही हम उनके महान व योगी वत्स कहलायेंगे, तब ही हममें, संसार उनका स्वरूप देख सकेगा और लोग मुक्तकंठ से गान करेंगे—

"शिव के रथी तूने जग में कर दिया कमाल"

केनबरा (आस्ट्रेलिया) में बी.के. भावना बहन इन्डियन हाई कमिशनर की धर्मपत्नि बहन अंसारी को प्रसाद दे रही हैं।

पंचमढ़ी में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन सी.एम.ओ. भ्राता सी.आर.सी. पिल्ले द्वारा किया गया।

मद्रास-दादी जानकी जी के मद्रास आगमन पर दादी जी, श्रीमति खुराना तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहिनों के साथ।

जठलाना : "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" के आध्यात्मिक कार्यक्रम में भ्राता जगदीश मेहता युगल सहित पधारे। ब्र.कु. मोहिनी सौगात दे रही हैं।

कटक छटिया गीता पाठशाला के वार्षिकोत्सव के अवसर पर ब्र.कु. कमलेश जी जनता को सम्बोधित कर रही हैं,

सबके हृदयों को शीतल करने वाली

—दादी हृदय मोहिनी

विशाल हृदय,गम्भीर एवं प्रशान्त चित्त दादी हृदय मोहिनीजी जो इस विश्वविद्यालय के अति विशिष्ट तथा कर्मठ कार्य कर्त्ताओं में से एक हैं। आपकी योग साधना भी अद्वीतीय है, आप निरन्तर 15-16 घण्टों तक ध्यान में रहती हैं।

आपकी महानता और परोपकारिता एवं निःस्वार्थ परायणता,योग की उच्चतम स्थितियों की स्पष्ट झलक का आभास पाठक प्रस्तुत लेख से करेंगे ही, साथ ही साथ स्व-परिवर्तन की प्रेरणा लेकर समय की इन्तज़ार से पहले ही सम्पूर्ण बाप समान फ़रिश्ता अथवा कर्मातीत बनने का संकल्प लेंगे।

—सम्पादक

दादी हृदय मोहिनी

मेरा जन्म सन् 1929 में कराची में सिन्ध के एक धनवान तथा धार्मिक परिवार में हुआ। लौकिक मां को विशेष गीता पढ़ने का शौक था। मेरी पाठपूजा में इतनी रुचि नहीं थी। लौकिक मां की मामी गंगादेवी के निमंत्रण पर मम्मा-बाबा हैदराबाद से कराची में 15 दिन के लिए आये थे। ओम मंडली के नाम से वहां सत्संग चल रहा था।उसके सामने ही मेरी नानी का घर था। एक दिन मेरी मां नानी के घर ले जाने के बहाने से मुझे सत्संग में ले गई। सत्संग में मेरी नानी भी बैठी हुई थी। उस समय मैं केवल नौ वर्ष की ही थी।

पहले ही दिन मुझे साक्षात्कार हुआ—

जैसे ही मैं सत्संग में जाकर बैठी तो थोड़े ही समय में मैं गुम हो गई। मुझे इस साकारी दुनिया का एकदम भान ही न था। साक्षात्कार में मैंने एक बड़ा सुन्दर हॉल देखा। हॉल की दीवार पर जैसे कि सच्चे सोने के पत्ते की बेल लगी हुई थी। बेल के फूल और पत्तों के बीच हीरे थे। हीरे ऐसे चमक रहे थे जैसे रंगीन बल्ब। लगता था कि कहां हरे तो कहां पीले रंग के बल्ब जल रहे हैं। ऐसे सुन्दर सजे हुए हॉल में डांसिंग पोज़ में श्रीकृष्ण खड़ा दिखाई दिया। जैसे मैं 8½ वर्ष की थी तो वह भी 9½ वर्ष का होगा। वह मुझे अंगुली के इशारे से रास करने के लिए बुला रहा था। इतना सीन देखने के बाद मैं नीचे उतरकर स्मृति में आ गई। उस सुन्दर हॉल तथा श्रीकृष्ण जैसा मैंने इस दुनिया में आजतक कहीं भी नहीं देखा।

मैं बोर्डिंग में रहने लगी—

एक वर्ष के बाद बाबा ने हैदराबाद में छोटे बच्चों के लिए बोर्डिंग स्थापन किया। यह समाचार लौकिक मां को जैसे ही मिला तो उसने मुझे बोर्डिंग में रखने का तय किया। हम लौकिक में 4 बहनें थीं, उन्हों में मैं सबसे बड़ी थी। तो मां को लगता था कि मेरी एक बच्ची भगवान् के कार्य में लग जाए। हमारे लौकिक सम्बंधियों की 7-8 बच्चियां और मैं कराची से बोर्डिंग में रहने के लिए गए। बाद में बाबा बोर्डिंग हैदराबाद से कराची में ले आए। उस समय गवर्नमेंट ने कायदा पास किया था कि जो नाबालक हैं, वे अपने घर चले जाएं। हमारे ग्रुप में से तो सभी अपने-अपने घर चले गए। मैं अकेली ही वहां रह गई थी। कुछ दिन के बाद मेरे लौकिक पिताजी मुझे घर वापस ले गए। बच्ची को भगवान् के घर से वापस लाने के कारण मेरी मां नाराज़ थी।

एक दिन सुबह जब सभी सोये हुए थे, तो मां ने मुझे जगाया और सत्संग के बहाने अपने साथ ले गई। मुझे सत्संग में बाबा के पास छोड़कर खुद घर वापस चली गई। इस बात से घर में बहुत हंगामा हुआ, लेकिन मां ने सहन किया। मुझे सत्संग की जीवन अच्छा लगती थी। हम सब सखियां आपस में मिलकर रहती थीं। 6 वर्ष तक मुझे किसी भी प्रकार का साक्षात्कार नहीं हुआ।

मुझे सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार हुआ—

उन दिनों हमें बाबा ने 8 दिन का मौन रखवाया था। बाबा ने कहा था कि इस मौन से कोई न कोई विचित्र रंगत दिखाई देगी। हम दो बहनें मौन रखकर शान्ति में बैठती थीं। एक दिन कमरे के सामने बालकनी में हम दोनों बैठी थीं तो अचानक मैं गुम हो गई और मुझे सूक्ष्मवतन तथा ब्रह्मा बाबा का

साक्षात्कार हुआ। तो जब मैं नीचे आ गई, तो जो मेरे साथ बैठी हुई बहन थी, वह मुझे मम्मा के पास ले गई। तो मम्मा ने पूछा कि आपने क्या देखा? छोटी होने के कारण मैं ठीक से सुना नहीं सकी। फिर भी जैसा मैंने देखा वैसे सुनाने की कोशिश की।

सूक्ष्मवतन ऐसा वतन था जहां हज़ारों चंद्रमा की चांदनी, चांदी जैसे चमकने वाली चारों तरफ लाईट ही लाईट थी। उस लाईट में ब्रह्मा बाबा भी थे। बाबा मुझे इशारे से बुला रहे थे—आओ, बच्ची आओ। मुझे संकोच हो रहा था कि ब्रह्मा बाबा यहां कैसे? लाईट के फीचर्स के कारण बाबा बहुत सुन्दर दिखाई दे रहे थे। बाद में मम्मा के कहने पर बाबा को भी यह दृश्य सुनाया। फिर भी स्पष्ट नहीं हुआ। सुनकर बाबा ने कहा, मम्मा ये कुछ नया राज़ लगता है। इस बच्ची को एकान्त वातावरण और कोई एक गाइड करने वाली बहन की ज़रूरत है। तब ही यह राज़ स्पष्ट होगा। तो बाबा मुझे बाबा भवन में, जहां बाबा रहते थे, वहां ले गए।

तो नियम प्रमाण मैं रोज़ ध्यान में जाती। बृजइंद्रा दादी मुझे कुछ प्रश्न देकर कहती थी कि ये प्रश्न उनसे पूछना। तो मैं वह प्रश्न पूछकर आती थी और बताती थी। तो स्पष्ट हुआ कि वो सूक्ष्मवतन था और वहां जो ब्रह्मा बाबा थे वो ब्रह्मा बाबा का सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप था। फिर तो मेरा संदेशी का पार्ट शुरू हुआ जिससे बाबा ने मुझे संदेश पुत्री नाम दिया।

बाबा ने मेरे द्वारा जन्मपत्री भी लिखवाई—

इस ध्यान के पार्ट द्वारा बाबा मुझे कई बच्चों की जन्मपत्री भी बताते थे। बाबा तो हरेक बच्चे की जन्मपत्री जानते ही थे। तो बाबा मुझे जो वतन में दिखाते थे, वो मैं आकर लिखती थी।

बाबा ने मुझे विनाश के सीन, गृह-युद्ध के सीन, ऐटम बम्ब बनने के पहले ही मुझे बताया कि कैसे अंडरग्राउंड आग के गोले जैसे ऐटम बम्ब बन रहे हैं। स्वर्ग की दिनचर्या, वहां की भाषा तथा रीत-रसम भी बाबा ने बताई। इसी तरह यह पार्ट फुलफोर्स से छः मास तक चलता रहा।

बाबा ने हमें भाषण करना सिखाया—

पाकिस्तान से आबू आने के बाद नियमित रूप से पढ़ाई शुरू हुई। पढ़ाई पढ़ाते समय बाबा ने सेवा करने की कला भी सिखाई। सेवा करते समय वकील, डॉक्टर, इंजीनियर या कोई राजकुमार, ऐसे विभिन्न वर्गों के सामने ज्ञान स्पष्ट रीति से कैसे रखें ये बाबा हमें समझाते थे। फिर मम्मा बाबा के बीच संदली पर बैठकर हम क्लास में भाषण करते थे। जिससे हमारा आत्मविश्वास और साहस बढ़ता था।

बाबा ने मुझे सेवा पर भेजा—

सबसे पहले बाबा ने मुझे बनारस में सेवार्थ 15 दिन के लिए भेजा। फिर मैं लखनऊ में 5 साल रही। उसके बाद दिल्ली में आ गई। बाबा मुझे कहते थे कि बच्ची के योगी नयन और मीठे बोल बहुत सेवा करेंगे। आगे चलकर बच्ची सेवा में बहुत सहयोगी बनेगी। एक बार सबसे पहला सिन्धी परिवार दादा राम और सावित्री बहन का मधुबन में बाबा से मिलाने लाया था। तो बाबा बहुत ही खुश होकर कहने लगे सचमुच बच्ची तो बाबा की आशाओं को पूर्ण करने वाली है।

ऐसे ही एक बार बाबा अपने कमरे में गद्दी पर बैठकर पत्र लिख रहे थे तो मैं बाबा के नज़दीक जाकर बैठी। बाबा ने कहा बच्ची, पत्र लिखना कोई बड़ी बात नहीं। मैंने कहा बाबा आपके जैसा हमारा पत्र कौन पढ़ेगा? कहा, बच्ची ऐसा समय आयेगा तो तुम भी बाबा जैसी सेवा करोगी।

सेवा में असम्भव बात भी सम्भव अनभुव होती थी—

जब हम लखनऊ में थे, तो हमारे पास सेवा करने के लिए स्थान नहीं था। हमें पता चला था कि एम.एल.एज. क्वार्टरस कुछ खाली हैं। तो स्वीकृति लेने के लिए हम मुख्यमंत्री के पास बड़े निश्चय और नशे से गये। मेरे साथ एक छोटी बहन भी थी। तो उनके पास जाकर हमने कहा बाबूजी, हम आपके पास ईश्वरीय सेवार्थ स्थान लेने के लिए आये हैं। सुना है आपके पास कुछ एम.एल.एज. क्वार्टरस खाली हैं। तो उन्होंने कहा बच्ची, नियम के अनुसार हम आपको वो नहीं दे सकते। हमने कहा कि कुछ भी हो जाए, हम तो खाली हाथ नहीं जाएंगे, हम तो आपसे स्वीकृति लेकर ही जाएंगे। आखिर उन्होंने हमें 3 मास के लिए स्वीकृति दी। फिर तो वहां सेवा करने से कुछ एम.एल.ए. हमारे विद्यार्थी बन गए। तो उनकी मदद से और भी 3 मास के लिए हमें वो क्वार्टरस मिल गये थे। तो बाबा की मदद से असम्भव बात भी सम्भव होती, यह अनुभव हमें कई बार हुआ।

बाबा को मैंने बेफिकर बादशाह की तरह देखा—

बाबा सदा बेफिकर रहते थे। बेगरी पार्ट में भी समस्याओं के समय सदा हल्के रहकर मनोरंजन की रीति से हमें चलाते थे। बाबा ने कभी भी ऐसा नहीं कहा कि पैसा न होने के कारण जंगल में जाकर चेरी का नाश्ता करना है। लेकिन बाबा कहते थे, आज बाबा बच्चों को सैर कराते हुए पेड़ के ताज़े फल खिलाना चाहते हैं। तो सभी खुशी से बाबा के साथ जाकर नाश्ता करके आते थे। ऐसे किसी भी प्रकार की समस्या जब भी यज्ञ पर आती थी, फिर भी बाबा के चेहरे पर बेफिकरी ही रहती थी। बाबा कहते थे, ये मेरी जिम्मेवारी नहीं, शिव बाबा की है। पहले बाप भूखा होगा तो बच्चे भूखे रहेंगे। शिव बाबा तो कभी भूखा रहता ही नहीं क्योंकि कितने भक्त और बच्चे उनको भोग खिलाते हैं। तो उसके बच्चे कैसे भूखे रहेंगे। बाबा का उठना, बैठना, चलना एकदम बेफिकर बादशाह की तरह था। कभी बाबा खड़े होकर दृष्टि देते थे तो लगता था कि कोई फरिश्ता या श्रीनारायण ही नशे से दृष्टि दे रहा है।

बाबा अगर कभी किसी बच्चे की कमी देखते भी थे, तो कभी वर्णन कर दिलशिक्सत नहीं बनाते थे। लेकिन उसकी विशेषता की महिमा करके उमंग-उत्साह से आगे बढ़ाते थे।

दादीजी, आप ध्यान में कैसे जाती हो, अनुभव सुनाइए—

पहले तो जैसे योग में बैठते हैं, वैसे ही मैं बैठती हूं। उस समय मन में संकल्प होता है कि बाबा मुझे बुलाएगा। उसके बाद ऐसा अनुभव होता है जैसे मैं धीरे-धीरे गुम हो रही हूं। तो यहां का दृश्य जैसे दूर-दूर होता जाता है। लास्ट में एकदम गुम हो जाती हूं। बुद्धि में लास्ट तक स्मृति होती है कि मैं जा रही हूं। कई बार ऐसा अनुभव होता है कि मैं बादलों को क्रास करके सूक्ष्मवतन में जा रही हूं, तो कभी सीधी ही वहां पहुंच जाती हूं। वहां लाईट के वतन में मैं भी सूक्ष्म शरीरधारी और बाबा भी सूक्ष्म आकारी रूप में अनुभव होता है। उस समय बाबा मुझसे जो बात करते हैं, या जो दृश्य दिखाते हैं वह ऐसा लगता है जैसे मैं प्रैक्टिकल में देख रही हूं। तो जो दृश्य वहां देखती हूं वह यहां आकर सुनाती हूं।

दादीजी, क्या यह ध्यान का पार्ट आपको योग में रहने के लिए मदद करता है?

ध्यान से योग में मदद मिलती ही है। जैसे कोई स्वर्ग को याद करना चाहे तो उसे वह बुद्धि से खींचकर याद करना पड़ता है। लेकिन मैंने तो वो नज़ारे देखे हैं तो उसे याद करना स्वाभाविक लगता है। शुरू-शुरू में हमारे में शहजादी भी प्रवेश होती थी, तो उस जीवन की अनुभूति होने से याद ताजी रहती है। जैसे मैं पांडव भवन, दिल्ली में रहकर यहां मधुबन में आती हूं तो वहां के जीवन की याद सहज आती है। ऐसे ही मूलवतन का तथा सूक्ष्मवतन के सीन बार-बार देखने से और सूक्ष्मवतन में बाबा के पास बार-बार आते-जाते रहने से समीपता का अनुभव होता है, जिससे योग सहज लगता है।

दादीजी, आपके तन में बापदादा की प्रवेशता कब से शुरू हुई?

जब सन् 1969 में अचानक ही बाबा अव्यक्त हो गये, तो सभी के मन में प्रश्न उठने लगे कि न जाने अभी क्या होगा, सेवाकेन्द्र चलेंगे या नहीं, मुरली चलेगी या नहीं, क्या अभी जल्दी ही विनाश होगा, तो इन प्रश्नों की हलचल बच्चों के मन में थी।

तो जिस दिन बाबा के देह का अंतिम संस्कार किया तो विधि प्रमाण मैं बाबा को भोग लगाने गई। तो अचानक मेरे तन में बापदादा आये। बाबा ने वाणी चलाई कि अभी रिवाईज़ कोर्स चलेगा, सेंटर की सेवा भी चलती रहेगी। बापदादा तो अभी भी बच्चों के साथ ही हैं, कोई अलग नहीं हुए सिर्फ कमरा बदली किया है। बाबा बच्चों को साथ ले जाने का वायदा निभायेगा ही। इसके बाद दादी-दीदी जिस भी रथ को मुकर्रर करेगी, उसी द्वारा बापदादा मिलते रहेंगे। तब से ही हमारा ये पार्ट शुरू हुआ।

दादीजी, आपके तन में बापदादा की प्रवेशता कैसे होती है, अनुभव बताइए?

पहले जैसा ध्यान में जाने के लिए बैठती हूं और सूक्ष्मवतन में जाती हूं, ठीक उसी तरह वतन में जाना होता है। वहां पहुंचने के बाद बाबा से मुलाकात होती है, बस यहां तक ही मुझे याद रहता है। बाद में तो बापदादा मेरे शरीर में प्रवेश होते हैं। जैसे जब क्लोरोफार्म देते हैं, तो शरीर में आत्मा होते हुए भी क्लोरोफार्म के नशे से पता नहीं चलता कि क्या हुआ? ऐसे ही बाबा मेरे स्मृति का स्विच बंदकर देते हैं जिससे मुझे अपनी देह का भी भान नहीं रहता है। उस समय मैं स्वीट सायलेन्स में रहती हूं। मेरे शरीर के द्वारा बाबा ने इतनी सेवा की, इसका भान मुझे नहीं रहता। जब बाबा यहां से जाते हैं तो मुझे सूक्ष्मवतन में इमर्ज करके मुलाकात करते हुए छुट्टी देते हैं। तो आते समय ऐसा लगता है कि मैं बहुत सुन्दर स्वीट सायलेन्स की स्टेज से आई हूं, इसलिए एक्रदम फ्रेश अनुभव करती हूं।

दादीजी, बापदादा की प्रवेशता से क्या आपको अपने पुरुषार्थ में मदद मिलती है?

बापदादा की प्रवेशता से तो बाबा का प्रभाव मेरी स्थिति पर पड़ता ही है। वैसे तो मेरा संस्कार सदा निस्संकल्प रहने का है। तो जैसे संग का रंग लगता है, तो ज्यादा समय तक अव्यक्त अर्थात् देह के भान से परे डबल लाईट रहने से ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त स्थिति की तथा अथक सेवा की विशेषता मेरी बन गई है। जिससे पावरफुल स्टेज का, हल्केपन का, फरिश्तेपन का अनुभव स्वाभाविक होता जा रहा है।

दादीजी, वर्तमान समय बाबा के बच्चों के प्रति कौन-से इशारे हैं?

आजकल जब मैं वतन में बाबा से मिलने जाती हूं तो ऐसा लगता है कि बाबा हम बच्चों में बिल्कुल कमी नहीं देखना चाहते हैं। जैसे खुद सम्पन्न सागर हैं वैसे हर बच्चे को बनाना चाहते हैं। बाबा जानते तो हैं कि मेरे बच्चे नम्बरवार हैं, फिर भी जैसे किसी बाप को बच्चा अति प्यारा होता है, तो बाप को लगता है कि बच्चे की तरफ से काम करके उसे आगे बढ़ाऊं। बाबा यही चाहते हैं कि हर बच्चा समय के पहले सम्पूर्ण बन जाए। समय तो रचना है, तो रचना को देखकर रचता सम्पूर्ण बनने की इन्तजार करे ये शोभा नहीं देता। बच्चे सम्पूर्ण बन जायेंगे तो समय स्वतः ही समीप आ जाएगा। इसलिए बाबा पहले ही एवररेडी बन तैयारी करने का इशारा दे रहे हैं। □

आध्यात्मिक सेवा समाचार

भारत के कोने-कोने से "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" कार्यक्रम के अन्तर्गत बहुत ही उत्साह और उल्लास भरे समाचार प्राप्त हो रहे हैं। सर्व समाचार इन पृष्ठों में देना कठिन है, कुछ समाचार निम्न हैं:-

करनाल (संतनगर) सेवाकेन्द्र की ओर से शिक्षाविद् सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 1000 अध्यापकों ने भाग लिया। इस अवसर पर शिक्षाविद् आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी लगाई गई। भारत में ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण, ब्रह्मा कुमार ब्रिजमोहन, सम्पादक प्योरिटी पत्रिका, बी.के. आशा, उपनिर्देशिका राजयोग पत्राचार पाठ्यक्रम तथा दादी चन्द्रमणीजी, संयुक्त प्रशासिका, ब्र.ई. वि.वि. विशेष रूप से पधारे। भ्राता बनारसीदास गुप्ता, उप-मुख्यमंत्री, हरियाणा मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। आपने नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया तथा ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

नारायणपुरा (अहमदाबाद) सेवाकेन्द्र की ओर से "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक वर्ग का स्नेह-मिलन स्थानीय केन्द्र पर ही रखा गया जिसमें यहां की प्रमुख शैक्षणिक संस्थाओं, स्कूल-कालेजों के संचालक, प्राचार्य एवं प्रोफेसर्स ने बड़े ही उमंग-उत्साह से भाग लिया। सभी को राजयोग प्रदर्शनी के चित्रों पर समझाया गया। इसके पश्चात् "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" कार्यक्रम क्या है, उसे स्पष्ट किया गया। सभी पधारे हुए महानुँभावों ने कार्यक्रम को स्वीकार किया तथा पूर्णरूपेण सहयोग देने का वचन दिया।

कटनी: समाचार मिला है कि इस वर्ष "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" के सपने को साकार रूप देने को ध्यान में रखते हुए चैतन्य-नव-दुर्गा की झांकी सेवाकेन्द्र पर रखी गयी जिसका उद्घाटन जिलाध्यक्ष भ्राता एस.आर. मोहन्ती जी ने किया। इस झांकी को ईश्वरीय ज्ञान द्वारा माईक पर लगातार समझाया भी जाता रहा। झांकी को शहर व गांव के लाखों आत्माओं ने देखा व सुना।

आगरा: समाचार मिला है कि रामलीला मैदान में आयोजित विशाल लायंस मेले में "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" योजना के अन्तर्गत एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन लायंस मेला अधिकारी डॉ. मुकर्जी तथा नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ किया गया। इस मेले द्वारा अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

अमृतसर: सेवाकेन्द्र पर ही शिक्षक स्नेह-मिलन का आयोजन किया गया। इसमें चालीस प्रिंसीपल, वाईस प्रिंसीपल एवं कई अन्य शिक्षकों ने भाग लिया। सभी को आध्यात्मिक संग्रहालय का अवलोकन कराया गया। बाद में शिक्षा प्रदर्शनी के चित्रों द्वारा भी समझाया गया। इस प्रोग्राम से शिक्षा-वर्ग वालों की अच्छी सेवा हुई। इसके अलावा तीस स्कूलों में भी आध्यात्मिक प्रवचन हुए।

भोपाल: समाचार मिला है भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम भ्राता शंकरदयाल शर्मा तथा बहन बिमला शर्मा के भोपाल आगमन पर, विशेष निमंत्रण पर पधारी ब्रह्माकुमारी बहनों ने राजभवन में उनका जाकर बहुत सुन्दर तरीके से स्वागत किया। साथ ही ल.ना. का चित्र तथा प्रसाद भेंट किया। ब्रह्माकुमार महेन्द्र जी ने भोपाल में होने वाले प्रशासनिक सम्मेलन का उद्घाटन करने हेतु विशेष निमंत्रण दिया।

जयपुर (राजा पार्क) सेवाकेन्द्र की ओर से "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षाविदों का स्नेह-मिलन सेवाकेन्द्र पर रखा गया। राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर्स, बी.एड. कालेज से आई.टी. के प्राध्यापक आदि पधारे। सभी को कार्यक्रम का उद्देश्य तथा शिक्षाविदों का सहयोग के विषय पर बताया गया। इसके अतिरिक्त आदर्श विद्या मन्दिर शिक्षा महाविद्यालय में भी कार्यक्रम हुआ। राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति रतन प्रकाश जी अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। इसके अतिरिक्त वीर बालिका महिला महाविद्यालय में महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे।

जम्मू: 'सुखमय संसार' बनाने के अभियान के अन्तर्गत जम्मू सेवाकेन्द्र की ओर से एक ज्ञानयुक्त प्रेरणादायक, शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक 'विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक मेले' का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन जम्मू और कश्मीर की विधान परिषद के सभापति भ्राता हकीम हबीबुल्ला जी द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मेले को प्रतिदिन लगभग 6000-7000 आत्माएं देखकर लाभ उठा रही हैं।

कानपुर (किदवई नगर): "सर्व के सहयोग से सुखमय संसार" बनाने के कार्यक्रम के अन्तर्गत सेवाकेन्द्र द्वारा आध्यात्मिक जगत् के सन्त-महात्माओं, महिलाओं, गुरुओं, संन्यासियों, समाज-सेवियों, नेताओं, ग्राम-प्रधान, डाक्टरों, इंजीनियरों, वकीलों, व्यापारियों एवं पत्रकारों आदि वर्गों से संपर्क स्थापित कर ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर आमंत्रित किया गया। सभी ने एकमत होकर मानव-मात्र के कल्याण के लिए भेदभाव रहित सबको समानता का दर्जा मिले, एक-दूसरे के सहयोगी बनें, ऐसा निश्चय कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

बम्बई (मुलुंड): सेवाकेन्द्र की ओर से शहर में तीन अलग-अलग स्थानों पर एवं लोनावला हिल-स्टेशन पर 5 अलग-अलग स्थानों पर 'परमात्म परिचय आध्यात्मिक प्रदर्शनी' लगाई गई। इन प्रदर्शनियों से लगभग 10,000 आत्माओं ने लाभ लिया। कई आत्माएं राजयोग का अभ्यास करने नियमित रूप से सेवाकेन्द्र पर भी आ रही हैं। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संसद सदस्य भ्राता गुरुदास कामत जी के सेवाकेन्द्र पर पधारने पर उनकी रूहानी सेवा की गई। आपने विद्यालय के द्वारा हो रहे ईश्वरीय कार्यों की बहुत ही सराहना की एवं विद्यालय के पूरे ही सहयोगी बने रहने की इच्छा व्यक्त की।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओम शान्ति प्रैस, कृष्णानगर, देहली-५१ से छपवाया
Regd No. 10563/65-D.(E)—70